● वर्ष : 04 ● अंक : 08 ● जनवरी 2026 ● हिन्दी मासिक पत्रिका ₹ 40/-

स्वतंत्र बोल

RNI : CHHHIN 2022/86325

www.swatantrabol.com

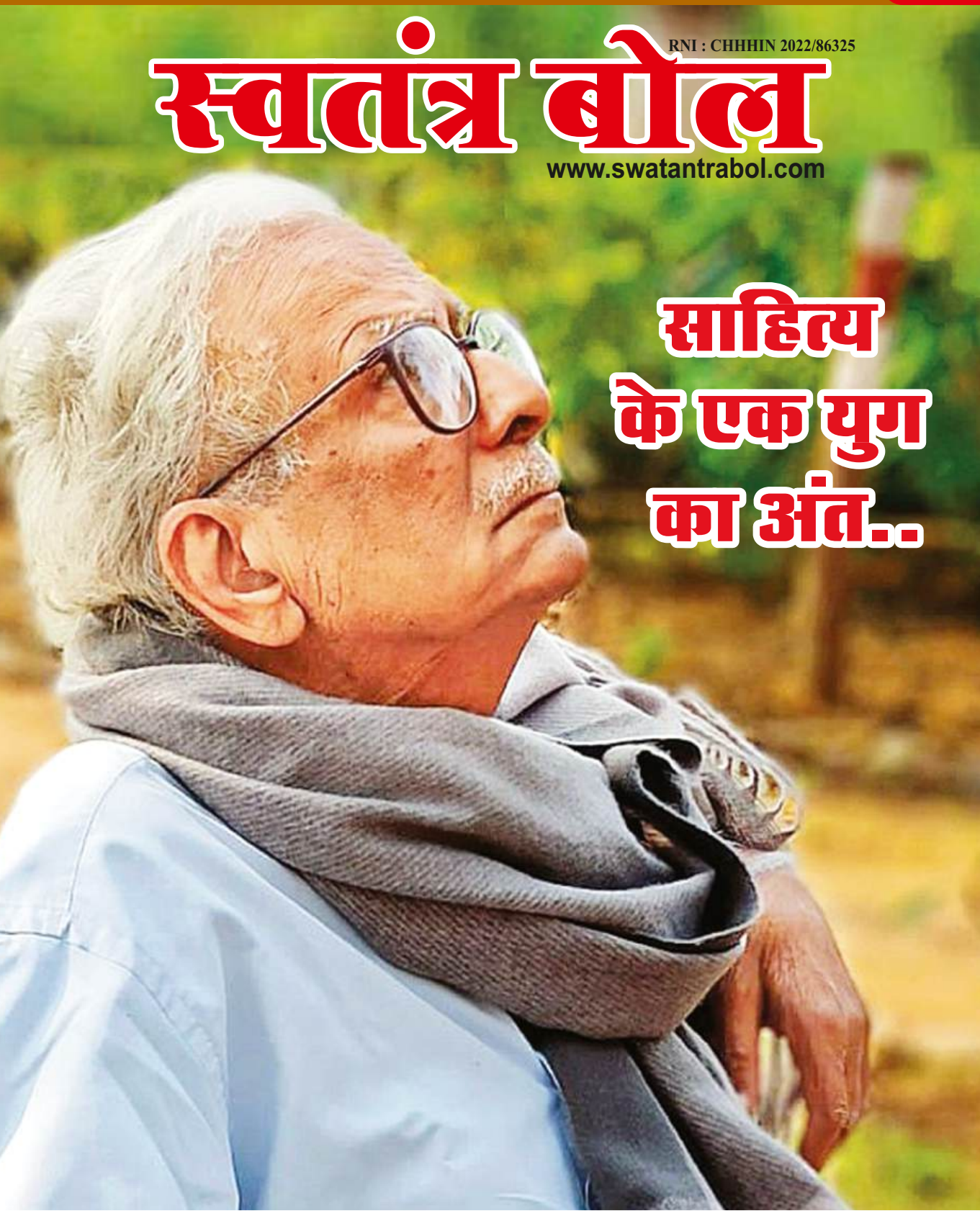

साहित्य के एक युग का अंत..

200
यूनिट तक बिजली पर बिल हाफ

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

प्रदेश के 42 लाख उपभोक्ताओं को लाभ

- घरेलू उपभोक्ताओं को 200 यूनिट तक विद्युत खपत पर 200 यूनिट तक हाफ बिजली का पूरा लाभ
- 200 से 400 यूनिट तक बिजली खपत पर अगले 1 वर्ष तक 200 यूनिट तक हॉफ बिजली बिल का लाभ

क्षमता	सब्सिडी केन्द्र+ राज्य सरकार
1 किलोवॉट	30+15 = 45 हजार
2 किलोवॉट	60+30 = 90 हजार
3 किलोवॉट	78+30 = 1 लाख 8 हजार

प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना

- **मुफ़्त बिजली:** 3 किलोवाट क्षमता वाला रूफटॉप सोलर सिस्टम लगाने पर, प्रति माह 360 यूनिट तक बिजली उत्पादन
- **अतिरिक्त बचत:** 3 किलोवाट के सोलर सिस्टम से ₹26,000 प्रति वर्ष तक बचत
- **सब्सिडी लाभ:** केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संयुक्त रूप से 1 किलोवॉट क्षमता के सोलर प्लांट स्थापना पर 45,000, 2 किलोवॉट पर 90,000 रुपए और 3 किलोवॉट के सोलर प्लांट की स्थापना पर अधिकतम 1,08000 रुपए की सब्सिडी
- **लोन सुविधा:** सोलर प्लांट की स्थापना पर बैंकों द्वारा 6% ब्याज दर पर ऋण
- **अतिरिक्त आय:** उत्पन्न अधिशेष बिजली को ग्रिड को बेचकर अतिरिक्त आय

सुशासन से समृद्धि की ओर

Visit us : ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

वर्ष : 04, अंक : 08, जनवरी 2026

प्रेरणास्त्रोत
स्व. जीवन गिरि गोस्वामी

संपादक
राहुल गिरि गोस्वामी

कानूनी सलाहकार
आनंद मोहन तिवारी
दिनेश मिश्रा

प्रचार-प्रसार-विज्ञापन
शेखर सागर

ले-आउट/डिजाइन
द्वारिका प्रसाद साहू

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
राहुल गिरि गोस्वामी द्वारा
शॉप नं. 258, सेकण्ड फ्लोर
लालगंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, घड़ी चौक
रायपुर (छ.ग.) पिन-492001 से प्रकाशित
एवं सागर प्रिंटर्स, पुरानी बस्ती, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001 से मुद्रित।
सम्पादक - राहुल गिरि गोस्वामी

रजिस्टर्ड कार्यालय
शॉप नं. 258, सेकण्ड फ्लोर
लालगंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, घड़ी चौक
रायपुर (छ.ग.) पिन-492001
Email : Bolswatantra@gmail.com
Phone : 9754374333

(समस्त न्यायालीन प्रकरणों के
निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र रायपुर होगा।)

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल का निधन 03

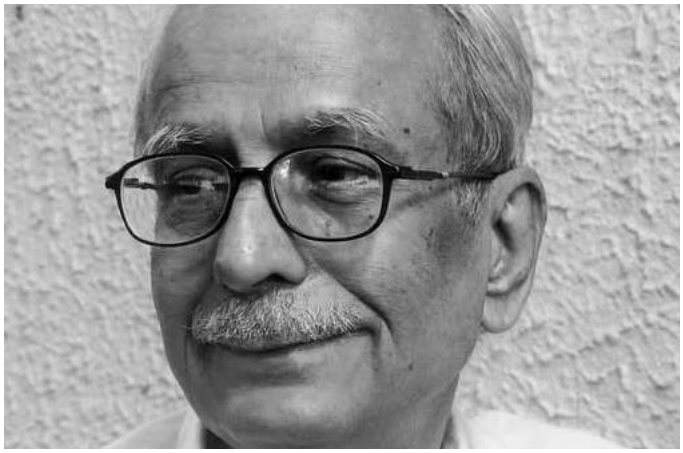

146 करोड़ रूपए की लागत से काशी की ... 05

डेढ़ एकड़ के कैंपस में होगा इंटीग्रेटेड... 07

भारत की पहचान है हिन्दुत्व - दत्तात्रेय होसबाले 12

दूरस्थ क्षेत्रों में पुल निर्माण से विकास की रफ्तार हुई दुगनी 17

कोई भी धर्म शांति भंग करने की बात... 18

विश्व का इकलौता कौशल्या माता मंदिर 22

सफलता के लिए निरंतर सीखना, कौशल... 24

छाप छोड़ने में नाकाम मंत्री..!

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सरकार ने अपने कार्यकाल के दो साल पूरे कर लिए। दो सालों में प्रदेश में अनेक परिवर्तन भी दिखे, और प्रदेश विकास की दिशा में बढ़ता जा रहा है। सरकार ने 13 मंत्री भी बनाए है ताकि प्रदेश का चहुमुखी विकास हो पर अधिकांश मंत्रियों में आपसी सामंजस्य का अभाव है। चुनिंदा मंत्रियों के अलावा बाकी मंत्री अपना छाप नहीं छोड़ सके है और बहुत जल्दबाजी में दिखते है। संगठन ने पहली बार विधायक बने कार्यकर्ताओं को सीधे मंत्री बनाकर दूसरी पंक्ति तैयार करने की कोशिश की है पर नए नवेले मंत्री अपनी छाप नहीं छोड़ पा रहे है। सुख सुविधाओं और सत्ता सुख में इतने व्यस्त हो गए कि वे अपनी मूल जिम्मेदारी भूल बैठे। ऐसे में सरकार और संगठन को विचार करना होगा।

– राहुल गोस्वामी

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल का निधन

ज्ञानपीठ से सम्मानित प्रख्यात साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल का मंगलवार को निधन हो गया। वह बीते कुछ दिनों से एम्स में एडमिट थे। 89 वर्षीय विनोद कुमार शुक्ल की तबीयत काफी नाजुक बनी हुई थी और मंगलवार को उन्होंने एम्स में ही आखिरी सांस ली।

एम्स प्रबंधन के अनुसार शुक्ल दो दिसंबर से भर्ती थे। वह गंभीर श्वसन रोग से ग्रसित थे। वह इंटरस्टिशियल लंग डिजीज (आईएडी) से भी पीड़ित थे और गंभीर निमोनिया भी हो गया था। शुक्ल को टाइप-2 मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याएं भी थीं।

राजनांदगांव जिले में हुआ जन्म

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 को छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले में हुआ। शिक्षा को पेशे के रूप में चुनकर उन्होंने अपना अधिक समय साहित्य सृजन में लगाया। वे हिंदी भाषा और साहित्य के ऐसे लेखक रहे, जिन्हें सरल भाषा, गहरी संवेदनशीलता और सृजनात्मक लेखन के लिए जाना जाता है।

उनके हिंदी साहित्य में अनूठे योगदान, विशिष्ट शैली और सृजनात्मकता के लिए वर्ष 2024 में उन्हें 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। विनोद कुमार शुक्ल हिंदी के 12वें ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ, और वे छत्तीसगढ़ राज्य के पहले लेखक हैं, जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया। हाल ही में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने एम्स पहुंचकर उनका हालचाल जाना था।

साहित्य और लेखन की विशेषताएं

लेखक, कवि और उपन्यासकार विनोद कुमार शुक्ल ने उपन्यास और कविता दोनों विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी पहली कविता 'लगभग जयहिंद' (1971) प्रकाशित हुई। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'नौकर की कमीज', 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' और 'खिलेगा तो देखेंगे' शामिल हैं।

1979 में प्रकाशित 'नौकर की कमीज' पर

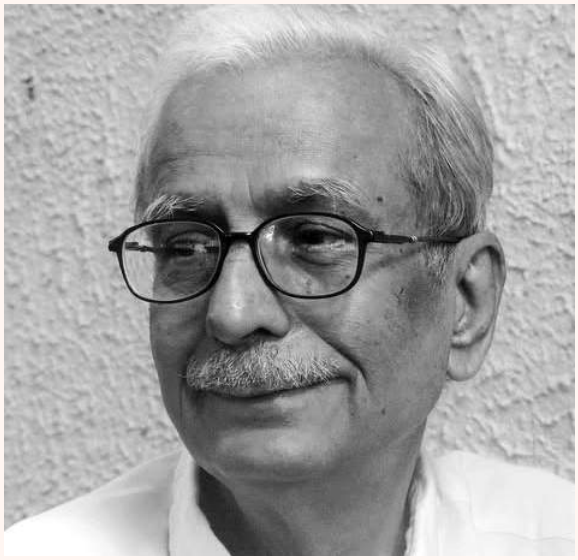

प्रमुख पुरस्कार और सम्मान

- गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिप (म.प्र. शासन)
- रजा पुरस्कार (मध्यप्रदेश कला परिषद)
- शिखर सम्मान (म.प्र. शासन)
- राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (म.प्र. शासन)
- दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान (मोदी फाउंडेशन)
- साहित्य अकादमी पुरस्कार (भारत सरकार)
- हिंदी गौरव सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)
- मातृभूमि पुरस्कार, 2020 ('ब्लू इज लाइक ब्लू', अंग्रेजी कहानी संग्रह)
- साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्य (2021)
- 2024 का 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार (समग्र साहित्य पर)

फिल्मकार मणिकौल ने इसी नाम से फिल्म भी बनाई। उनके उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिल चुका है। शुक्ल का लेखन सरल भाषा, संवेदनशीलता और अनूठी शैली के लिए प्रसिद्ध था। उन्होंने हिंदी साहित्य में प्रयोगधर्मी लेखन के नए आयाम स्थापित किए।

भारतीय वैश्विक साहित्य को समृद्ध किया

विनोद कुमार शुक्ल केवल कवि ही नहीं, बल्कि कथाकार भी रहे। उनके उपन्यासों ने हिंदी में एक मौलिक भारतीय उपन्यास की दिशा दी। उन्होंने लोक आख्यान और आधुनिक मनुष्य की जटिल आकांक्षाओं को समाहित करते हुए नए कथा ढांचे का निर्माण किया। उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की बारीकियों को कुशलता से चित्रित किया गया। उनकी विशिष्ट भाषिक शैली, संवेदनात्मक गहराई और सृजनशीलता ने भारतीय और वैश्विक साहित्य को समृद्ध किया।

प्रमुख कृतियां
कविता संग्रह

- लगभग जयहिंद (1971)
- वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह (1981)
- सब कुछ होना बचा रहेगा (1992)
- अतिरिक्त नहीं (2000)
- कविता से लंबी कविता (2001)
- आकाश धरती को खटखटाता है (2006)
- पचास कविताएं (2011)
- कभी के बाद अभी (2012)
- कवि ने कहा – चुनी हुई कविताएं (2012)
- प्रतिनिधि कविताएं (2013)

उपन्यास

- नौकर की कमीज (1979)
- खिलेगा तो देखेंगे (1996)
- दीवार में एक खिड़की रहती थी (1997)
- हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़ (2011)
- यासि रासा त (2016)
- एक चुप्पी जगह (2018)
- कहानी संग्रह
- पेड़ पर कमरा (1988)
- महाविद्यालय (1996)
- एक कहानी (2021)
- घोड़ा और अन्य कहानियां (2021)
- कहानी/कविता पर पुस्तक
- गोदाम (2020)
- गमले में जंगल (2021)

146 करोड़ रूपए की लागत से काशी की तर्ज पर बनेगा भव्य भोरमदेव कॉरिडोर

छत्तीसगढ़ की प्राचीन धरोहर बनेगी विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल

केंद्र सरकार की स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के तहत छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में 146 करोड़ रू. की लागत से भोरमदेव कॉरिडोर परियोजना का विकास किया जा रहा है। भूमिपूजन दिसंबर 2025 के अंतिम सप्ताह में प्रस्तावित है, जिसमें मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के साथ केंद्रीय पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत शामिल होंगे। यह ऐतिहासिक निर्णय राज्य के पुरातात्विक और धार्मिक स्थलों को जोड़कर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करेगा।

स्थानीय अर्थव्यवस्था को मिलेगी मजबूती

भोरमदेव कॉरिडोर परियोजना के पूर्ण होने पर धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन को नई गति मिलेगी, स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार सृजित होंगे तथा क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी। यह छत्तीसगढ़ की प्राचीन धरोहरों को आधुनिक सुविधाओं से जोड़कर सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत करेगी।

1000 वर्ष पुरानी धरोहर को नया जीवन

भोरमदेव मंदिर के इतिहास में पहली बार वाटर ट्रीटमेंट जैसी आधुनिक पहल हो रही है। परियोजना के अंतर्गत मुख्य मंदिर परिसर समेत मड़वा महल, छेरकी महल, रामचुआ, सरोधा दादर तक कॉरिडोर का समग्र विकास होगा। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर की तर्ज पर 6 प्रवेश द्वार, पार्क, संग्रहालय, परिधि दीवारों का संवर्धन, बाउंड्री वॉल साज-सज्जा, बोरवेल से पेयजल, शेड, बिजली, ड्रेनेज और पौधरोपण की व्यवस्था की जाएगी। ऐतिहासिक तालाब का सौंदर्यीकरण किया जाएगा। सफाई, जल गुणवत्ता सुधार, किनारों पर हरित क्षेत्र, बैठने की जगह और पैदल पथ विकसित किए जाएंगे। भोरमदेव मंदिर आने वाले हजारों कांवड़ यात्रियों के लिए आधुनिक शेड का निर्माण किया जाएगा। शेडों में पेयजल, स्वच्छता, विश्राम की समुचित व्यवस्था होगी, जिससे श्रद्धालुओं को सुरक्षित और सुविधाजनक ठहराव मिल सकेगा।

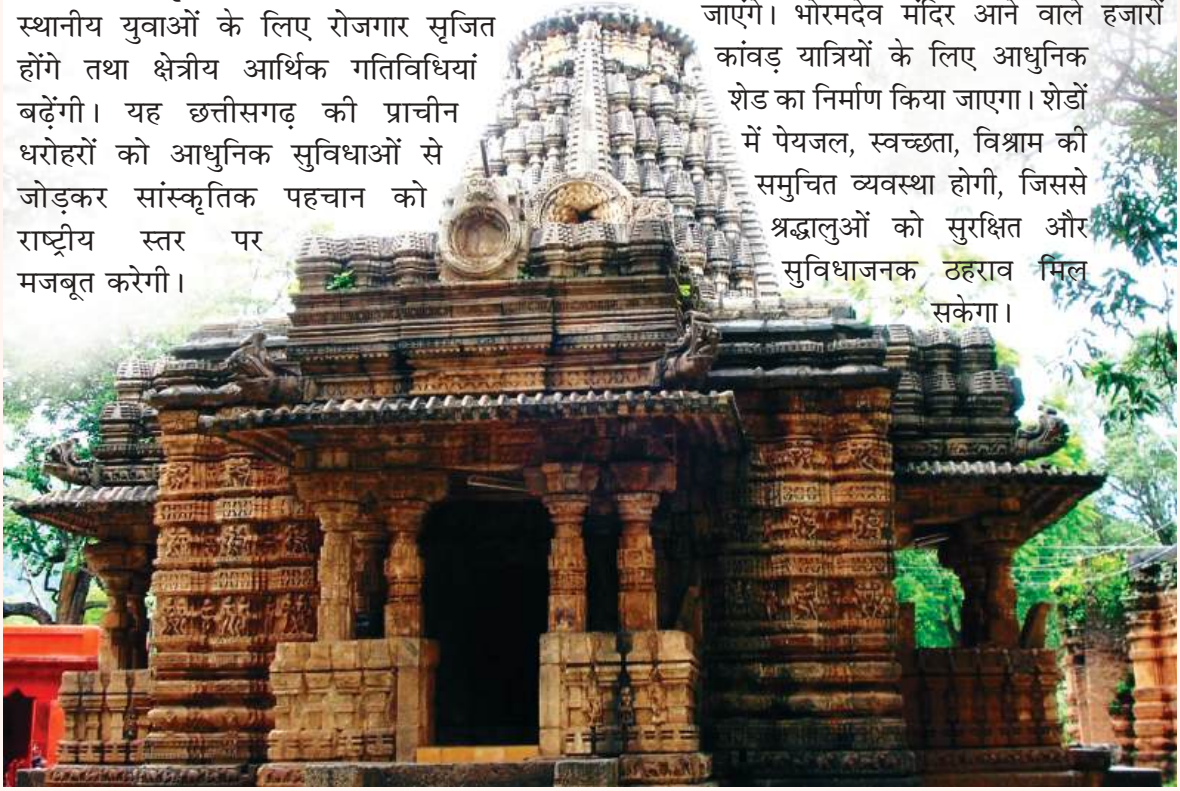

सतनाम धर्म के प्रवर्तक संत गुरु घासीदास..

भारत में प्रत्येक वर्ष 18 दिसंबर को गुरू घासीदास जयंती मनाई जाती है। घासीदास मूलतः छत्तीसगढ़ के रहने वाले थे, लिहाजा इस दिन छत्तीसगढ़ में यह दिवस बड़े उत्साह एवं श्रद्धा भाव से मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में राज्य सरकार ने इस दिन राजकीय अवकाश घोषित किया हुआ है।

गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसंबर 1756 को गिरौदपुरी (छत्तीसगढ़) स्थित एक गरीब परिवार में हुआ था, उनके पिता का नाम महंगू दास एवं माता का नाम अमरौतिन था। उनकी पत्नी का नाम सफुरा था। बचपन से ही सत्य के प्रति अटूट आस्था एवं निष्ठा के कारण बालक घासीदास को कुछ दिव्य शक्तियां हासिल हो गईं, जिसका अहसास बालक घासी को भी नहीं था, उन्होंने जाने-अनजाने कई चमत्कारिक प्रदर्शन किये, जिसकी वजह से उनके प्रति लोगों की आस्था एवं निष्ठा बढ़ी। ऐसे ही समय में बाबा ने भाईचारे एवं समरसता का संदेश दिया। उन्होंने समाज के लोगों को सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी। उन्होंने न सिर्फ सत्य की आराधना की, बल्कि अपनी तपस्या से प्राप्त ज्ञान और शक्ति का उपयोग मानवता के लिए किया। उन्होंने छत्तीसगढ़ सतनाम पंथ की स्थापना की

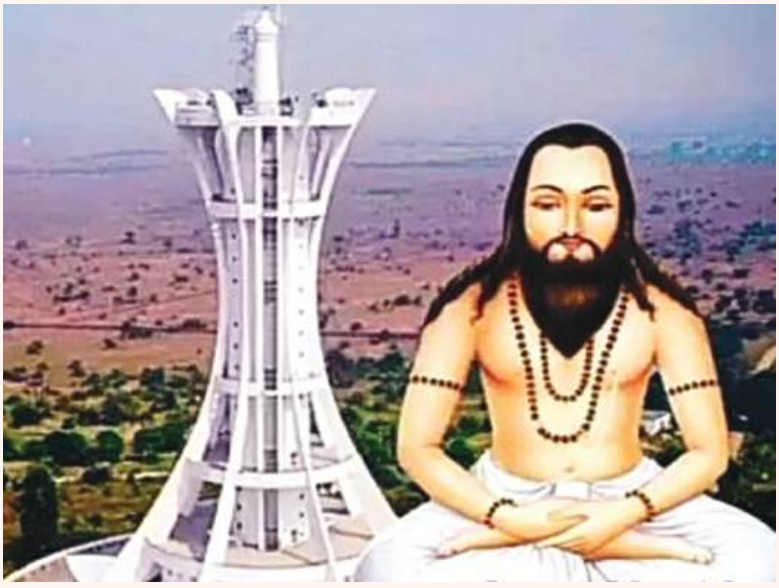

गुरू घासीदास की शिक्षा और उपदेश

बाबा घासीदास को छत्तीसगढ़ के रायगढ़ के सारंगढ़ (बिलासपुर) स्थित एक वृक्ष के नीचे तपस्या करते समय ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। उन्होंने समाज में व्याप्त जातिगत विषमताओं को ही नहीं बल्कि ब्राह्मणों के प्रभुत्व को भी नकारा और विभिन्न वर्गों में बांटने वाली जाति व्यवस्था का विरोध भी किया। उनके अनुसार समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार और महत्व दिया जाना चाहिए। घासीदास ने मूर्ति-पूजा का विरोध किया। उनके अनुसार उच्च वर्गों एवं मूर्ति पूजकों में गहरा संबंध है। घासीदास जी पशुओं से भी प्रेम करने की शिक्षा देते थे। वे पशुओं पर क्रूर रवैये के खिलाफ थे। सतनाम पंथ के अनुसार खेती के लिए गायों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। घासीदास के उपदेशों का समाज के पिछड़े समुदाय में गहरा असर पड़ा।

क्या हैं गुरु घासीदास के सप्त सिद्धांत?

गुरु घासीदास के सात वचन सतनाम पंथ के सप्त सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिसमें सतनाम पर विश्वास, मूर्ति पूजा का निषेध, वर्ण भेद एवं हिंसा का विरोध, व्यसन से मुक्ति, परस्त्रीगमन का निषेध और दोपहर में खेत न जोतना आदि हैं। बाबा गुरु घासीदास द्वारा दिये गये उपदेशों से समाज के असहाय लोगों में आत्मविश्वास, व्यक्तित्व की पहचान और अन्याय से जूझने की शक्ति प्राप्त हुई।

डेढ़ एकड़ के कैंपस में होगा इंटीग्रेटेड खाद्य एवं औषधि परीक्षण प्रयोगशाला का निर्माण

मुख्य बजट 2025-26 की एक और बड़ी घोषणा पूर्ण, 46.49 करोड़ की प्रशासकीय स्वीकृति

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की मंशा के अनुसार नवा रायपुर में प्रस्तावित इंटीग्रेटेड खाद्य एवं औषधि परीक्षण प्रयोगशाला सह एफडीए भवन के निर्माण के लिए राज्य सरकार ने 46 करोड़ 49 लाख 45 हजार रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान कर दी है। मुख्य बजट 2025-26 के प्रावधान के अनुरूप इस महत्वपूर्ण परियोजना से प्रदेश में खाद्य एवं औषधि परीक्षण क्षमता को नई मजबूती मिलेगी।

नवीन इंटीग्रेटेड खाद्य एवं औषधि परीक्षण प्रयोगशाला तथा नवीन एफ.डी.ए. भवन का रायपुर में स्थापना करने हेतु शासन द्वारा नया रायपुर में 1.5 एकड़ भूमि उपलब्ध कराई गई है। रायपुर स्थित वर्तमान प्रयोगशाला लगभग 5 हजार वर्ग फीट (भूतल, प्रथम एवं द्वितीय तल) में संचालित है। प्रस्तावित नवीन प्रयोगशाला अत्याधुनिक उपकरणों (ड्रग एवं इनफोर्समेंट) से सुसज्जित होगा तथा 30 हजार वर्ग फीट क्षेत्र में (भूतल, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तल) में निर्मित होगा। इसके निर्माण से रासायनिक परीक्षणों की जांच क्षमता 500-800 नमूने प्रतिवर्ष से 7000-8000 नमूने प्रतिवर्ष हो जाएंगी। माइक्रोबायोलॉजिकल परीक्षण (इंजेक्शन, आई ड्रॉप आदि) 2000 नमूने प्रतिवर्ष होंगे, मेडिकल डिवाइसेस (हाथ के दस्ताने, कैथेटर आदि) जिनका वर्तमान में परीक्षण नहीं किया जा रहा है उनका भी 500 नमूने प्रतिवर्ष लिए जाएंगे। इसके साथ ही फार्मास्यूटिकल्स नमूनों की जांच 50 से बढ़कर 1000 नमूने प्रतिवर्ष हो जाएंगे। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने इस स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्रयोगशाला राज्य में खाद्य सुरक्षा के ढांचे को और मजबूत करेगी। उन्होंने कहा कि इससे जांच प्रक्रिया अधिक आसान, पारदर्शी और प्रभावी होगी। सरकार जनता को शुद्ध, प्रमाणित और गुणवत्तापूर्ण खाद्य उत्पाद एवं दवाएं उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

स्वास्थ्य मंत्री ने यह भी कहा कि नवा रायपुर में बनने वाली यह आधुनिक प्रयोगशाला राज्य के लिए एक आदर्श प्रयोगशाला के रूप में विकसित होगी और सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

आदिवासी समाज के उत्थान और कल्याण के लिए छत्तीसगढ़ सरकार प्रतिबद्ध

हर बेटी-बेटा को शिक्षित करना ही समाज को देगा मजबूती

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय रायगढ़ के बोईरदादर में आयोजित अखिल भारतीय कंवर समाज के वार्षिक सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री साय ने समाज की मांग पर 30 लाख रुपए की लागत से निर्मित सामुदायिक भवन के प्रथम तल का लोकार्पण किया। समाज के वरिष्ठजनों ने मुख्यमंत्री का पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कंवर समाज के पुरोधाओं को नमन करते हुए कहा कि समाज का विकास शिक्षा से ही संभव है। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल नौकरी ही नहीं, बल्कि विभिन क्षेत्रों में सफल बनने का माध्यम भी है। हर बेटा-बेटी को शिक्षित करना ही समाज को मजबूती देगा। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार आदिवासी समाज के उत्थान और कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। आदिवासियों एवं क्षेत्रों के विकास के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही है जिसका लाभ लोगों को मिल रहा है। उन्होंने शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आव्हान भी किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने जनजातीय समाज के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को याद करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस घोषित कर जनजातीय समुदाय के सम्मान को नई ऊंचाई दी है। उन्होंने बताया कि आदिवासी समाज को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने धरती आबा ग्राम उत्कर्ष और पीएम जनमन कार्यक्रम की शुरूआत की है। यह आदिवासी कल्याण के क्षेत्र में आजादी के बाद सबसे बड़ा अभियान है। उन्होंने कहा

कि इन योजनाओं के माध्यम से सभी प्रकार की मूलभूत सुविधाएं जनजातीय परिवारों को उपलब्ध करायी जा रही है। इन योजनाओं से जनजातीय क्षेत्रों में तेज गति से विकास हो रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ की रजत जयंती समारोह के अवसर पर रायपुर में शहीद वीर नारायण सिंह आदिवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्मारक सह संग्रहालय का लोकार्पण किया है। संग्रहालय में छत्तीसगढ़ के वीर सेनानियों का देश के लिए योगदान जीवंत रूप में प्रदर्शित हो रहा है। यह आने वाली पीढ़ियों को हमारे वीर नायकों के शौर्य और बलिदान से परिचित कराता रहेगा। यह हमारे आदिवासी समाज के लिए भी गौरव की बात है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के 25 वर्ष पूरे होने पर राज्य के विकास-पीडीएस प्रणाली, सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य के व्यापक विस्तार का उल्लेख करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य निर्माण के बाद गांव-गांव तक पहुंच मार्ग और विकास की रोशनी पहुँची है। राज्य में नक्सलवाद विकास में सबसे बड़ी बाधा रहा है, लेकिन सरकार के प्रयासों से यह अंतिम सांस ले रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद खत्म करने का लक्ष्य तय किया है।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश की नई औद्योगिक नीति के बारे में उल्लेख करते हुए कहा कि इसके तहत 8 लाख करोड़ रुपए से अधिक निवेश का प्रस्ताव प्राप्त हुआ है। हम उद्योग धंधों के माध्यम से युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने का प्रयास कर रहे है। इसके साथ ही हमारी सरकार प्रदेश के सभी समाज को मजबूती के साथ आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित कर रही है, इसका लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने इस मौके पर कई महत्वपूर्ण घोषणाएँ कीं, जिनमें कंवर समाज के लिए बोईरदादर रायगढ़ मे एक और सांस्कृतिक भवन के साथ मुख्य मार्ग तक सीसी रोड का निर्माण, लैलूंगा के टुरटूरा में नए समाजिक भवन, लैलूंगा और घरघोड़ा में निर्मित सामाजिक भवन के विस्तार की घोषणा की।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की धर्मपत्नी कौशल्या साय, लोकसभा सांसद राधेश्याम राठिया, राज्यसभा सांसद देवेंद्र प्रताप सिंह, महापौर जीवर्धन चौहान, जिला पंचायत उपाध्यक्ष दीपक सिदार, भरत साय, सत्यानंद राठिया, अनंतराम पैंकरा सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

जल है तो कल है और अमृत सरोवर इस 'कल' को सुरक्षित रखने का राष्ट्रीय संकल्प है

भारत में जल हमेशा से जीवन, संस्कृति और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी रहा है। लेकिन समय के साथ बदलते मौसम, अनियमित वर्षा और भूजल स्तर में लगातार गिरावट ने गाँवों में पानी की उपलब्धता को चुनौतीपूर्ण बना दिया। इसी पृष्ठभूमि में देशभर में शुरू हुए 'अमृत सरोवर' अभियान ने जल-संरक्षण को एक नए स्वरूप और नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाया है। यह सिर्फ एक तालाब निर्माण कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनभागीदारी, पर्यावरण-संरक्षण और ग्रामीण विकास का समन्वित मॉडल बन चुका है।

अमृत सरोवर -सोच से साकार तक

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में प्रारंभ हुए इस राष्ट्रीय मिशन का उद्देश्य प्रत्येक जिले में अनेक 'अमृत सरोवर' विकसित करना है, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में जल उपलब्धता बढ़े, मिट्टी व जल संरक्षण हो और स्थानीय समुदाय को स्थायी लाभ मिल सके। अमृत सरोवर की संकल्पना तीन प्रमुख आधारों पर टिकी है- जल संचयन, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण समुदाय की भागीदारी। इस मॉडल में गाँव का हर व्यक्ति पंच-सरपंच से लेकर श्रमिक, किसान और युवा अपनी सक्रिय भूमिका निभाता है।

सरोवर का विस्तृत स्वरूप -सिर्फ संरचना नहीं, सजीव संसाधन

एक अमृत सरोवर का निर्माण मात्र मिट्टी खुदाई या सफाई भर नहीं है। इसके साथ कई दीर्घकालिक प्रावधान सुनिश्चित किए जाते हैं। गहरी खुदाई कर बड़ी जल क्षमता का निर्माण, तल एवं तटों पर घास/वनस्पति रोपण, चारों ओर सुरक्षा तटबंध, वर्षा जल संग्रहण के वैज्ञानिक प्रबंध, आसपास वृक्षारोपण कर जल संरक्षण चक्र को मजबूत करना, गाँव के लिए पर्यटन/मनोरंजन स्थल के रूप में विकसित करने की संभावनाएं तलाशना भी है। इससे सरोवर केवल पानी का स्रोत नहीं, बल्कि पूरे गाँव की पर्यावरणीय और सामाजिक धुरी बन जाता है।

क्यों आवश्यक है अमृत सरोवर?

ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले वर्षों में पानी की कमी और बरसाती जल का बहाव एक गंभीर समस्या बन चुका था। अमृत सरोवर इसके जवाब में एक समग्र समाधान बनकर उभरा- भूजल स्तर में वृद्धि, कृषि के लिए सिंचाई सुविधा में सुधार, पशुओं के लिए सुरक्षित पानी की उपलब्धता, बाढ़ नियंत्रण में सहायता, सूखे की समस्या में राहत, पर्यावरणीय संतुलन मजबूत होती है। इन सभी प्रभावों ने अमृत सरोवर को ग्रामीण विकास

योजनाओं में केंद्र बिंदु बना दिया है।

एमसीबी जिले का उदाहरण - उत्कृष्टता का मॉडल

जिला एमसीबी में अमृत सरोवर अभियान ने विकास का नया मानक स्थापित किया है। यहाँ प्रत्येक ब्लॉक में सरोवरों को समयबद्ध तरीके से विकसित किया गया, स्थानीय मजदूरों को मनरेगा के माध्यम से रोजगार, ग्राम पंचायतों की सक्रिय भागीदारी, संरक्षण के आधुनिक उपाय के साथ लागू किया गया। सरोवरों के पूर्ण होने के बाद आसपास के किसानों को फसल की सिंचाई में बड़ी सहायता मिली है। बरसात के बाद जल भराव से बचाव और तालाबों की स्थायी जल उपस्थिति ने ग्रामीणों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। कई गाँवों में अमृत सरोवर आज पिकनिक स्पॉट, समुदाय मिलन स्थल, और पर्यावरण शिक्षा केंद्र के रूप में पहचान बना चुके हैं।

जनभागीदारी- इस मिशन की सबसे बड़ी ताकत

एक अमृत सरोवर तभी सफल होता है जब गाँव स्वयं इसमें भागीदारी करता है। ग्राम पंचायत, जनप्रतिनिधि, स्वयं सहायता समूह, युवा मंडल, स्कूल, किसान–सभी अपने–अपने स्तर पर योगदान देते हैं इसमें श्रमदान, पौधरोपण, जल संरक्षण के प्रति जागरूकता, रखरखाव और सुरक्षा, सरोवर में कचरा न डालने की प्रतिज्ञा लेना शामिल है। इससे सरोवर लंबे समय तक जीवित रहता है और जल सतत उपयोग योग्य बनता है।

भविष्य की दिशा- स्थायी जल प्रबंधन का मजबूत आधार

अमृत सरोवर अभियान ग्रामीण भारत में स्थायी जल प्रबंधन का मजबूत आधार बन रहा है। यह जल संरक्षण को केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं रहने देता बल्कि सामुदायिक आंदोलन में बदल देता है।

भविष्य में सरोवर पर्यटन केंद्र, पर्यावरण शिक्षा संस्थान, आजीविका मॉडल (मत्स्य पालन, पर्यटन), सामुदायिक विकास परिसर के रूप में सामने आ सकते हैं।

अमृत सरोवर, अमृत भविष्य

अमृत सरोवर केवल जल संचयन का माध्यम नहीं, बल्कि गाँवों में आत्मनिर्भरता, सामुदायिक शक्ति और प्रकृति के साथ संतुलन की नई कहानी है। यह कार्यक्रम आने वाली पीढ़ियों के लिए वह मूल्यवान जल–धरोहर तैयार कर रहा है, जो भविष्य में गाँवों की जीवनरेखा बनकर उभरेगी। जल है तभी कल है और अमृत सरोवर इस 'कल' को सुरक्षित रखने का राष्ट्रीय संकल्प है।

(विशेष लेख– लोकेश्वर सिंह)

भारत की पहचान है हिन्दुत्व - दत्तात्रेय होसबाले

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जेसीज़ पब्लिक स्कूल सभागार में आयोजित प्रमुख जन गोष्ठी में सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी ने कहा कि हिन्दुत्व भारत की पहचान है और यह केवल धार्मिक पहचान नहीं है, भौतिक पहचान भी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिन्दुत्व ही भारत की पहचान के मंत्र को आधार मानकर संघ को आगे बढ़ाया है और यही संघ की 100 वर्षों की यात्रा का स्रोत है। गोष्ठी के प्रारंभ में सरकार्यवाह जी ने दीप प्रज्ज्वलित किया। कार्यक्रम में मंच पर प्रांत संघचालक डॉ. बहादुर सिंह बिष्ट भी उपस्थित रहे।

प्रमुख जन गोष्ठी में सरकार्यवाह जी ने कहा कि संघ संस्थापक डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और बहुत से क्रांतिकारियों का सहयोग भी किया। किंतु उनके मन में यह विचार हमेशा चलता रहा कि भारत एक प्राचीन राष्ट्र है और भौतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नत रहा है। यहाँ किसी चीज का अभाव न था, फिर भी वह कौन सा कारण था कि हम बार-बार पराजित होते थे और हमारे समाज में मानसिक एवं बौद्धिक गुलामी का स्वभाव उत्पन्न हो गया। उन्होंने कहा कि एक कालखंड ऐसा रहा जब हमारे समाज के लोग केवल व्यक्तिगत हित के बारे में विचार करते थे, समाज के नहीं। यही विचार कर डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की और संकल्प लिया कि हिन्दू समाज की शक्ति को संघ की शाखा के माध्यम से संगठित कर इस मानसिकता को बदलेंगे। उन्होंने शाखा के रूप में एक ऐसा तंत्र दिया, जिससे संघ ने व्यक्ति निर्माण का कार्य प्रारंभ किया।

दत्तात्रेय होसबाले जी ने कहा कि संघ केवल व्यक्ति निर्माण का कार्य करेगा और स्वयंसेवक समाज के हर क्षेत्र में कार्य करेंगे। संघ के स्वयंसेवकों ने समाज में विभिन्न क्षेत्रों में संगठन खड़ा किए हैं। इसके अलावा आज देश में एक लाख से अधिक सेवा प्रकल्प चल रहे हैं। संघ जो भी कर रहा है, समाज के सहयोग से ही कर

रहा है और समाज में जिस व्यक्ति का राष्ट्र भाव जागृत होता है वो संघ के सेवा कार्य से आकर जुड़ जाता है।

उन्होंने समाज में पञ्च परिवर्तन – समरसता, नागरिक कर्तव्य, स्व का बोध, कुटुंब प्रबोधन और पर्यावरण संरक्षण के सूत्र को समाज में ले जाने का आग्रह किया और विस्तार से इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमने कोई सेलिब्रेशन या जुबली कार्यक्रम नहीं करने थे। संघ हमेशा समाज को जागृत करने का काम करता आया है, उसी दिशा में कार्य कर रहा है और समाज में राष्ट्र प्रथम की भावना जागृत कर रहा है।

उन्होंने पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता को अपने स्वभाव में लाने पर जोर दिया। साथ ही परिवार के महत्व पर कहा कि हमारा भारत तभी सुरक्षित रहा क्योंकि हमारे परिवार सुरक्षित रहे, आर्थिक रूप से भी मजबूत रहा।

उन्होंने कहा कि भारत के समाज को श्रेष्ठ समाज बनाने के लिए संघ का प्रयास जारी है। समाज के लिए अच्छा काम करने के लिए लोगों को आगे आना चाहिए। ऐसे लोगों को संघ के लिए काम करने वाला बताते हुए कहा कि संघ के कार्यकर्ता हर अच्छे कार्य में मदद करते हैं।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई..

अटल बिहारी वाजपेयी, जिन्हें जन-जन का आदमी कहा जाता है, तीन कार्यकालों तक भारत के प्रधानमंत्री रहे और निस्संदेह एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी हैं। अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को हुआ था। उनका जीवन नौ दशकों से भी अधिक समय तक सराहनीय रहा। इस अटल बिहारी वाजपेयी जीवनी में, हम उनकी कुछ महान उपलब्धियों, प्रारंभिक जीवन, करियर और राष्ट्र के उत्थान में उनकी भूमिका आदि पर नज़र डालेंगे।

बचपन और प्रारंभिक जीवन

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ था। उनका जन्म कृष्ण बिहारी वाजपेयी और कृष्णा देवी के यहाँ एक हिंदू ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उज्जैन के बड़नगर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर और एंग्लो-वर्नाक्युलर मिडिल (एवीएम) स्कूल से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद, अटल जी ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज गए जहाँ उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत और हिंदी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद उन्होंने कानून की पढ़ाई की, लेकिन 1947 के विभाजनकारी दंगों के कारण इसे छोड़ दिया।

आजीविका

अटल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक सक्रिय सदस्य थे, शुरुआत में वे एक स्वयंसेवक के रूप में संघ से जुड़े और बाद में विस्तारक (एक परिवीक्षाधीन पूर्णकालिक कार्यकर्ता) के पद तक पहुँचे। उन्होंने कई समाचार पत्रों - पांचजन्य (साप्ताहिक हिंदी), राष्ट्रधर्म (मासिक हिंदी), और स्वदेश तथा वीर अर्जुन (दैनिक) के लिए उत्तर प्रदेश में विस्तारक के रूप में कार्य किया।

वाजपेयी का राष्ट्रीय राजनीति में पहला कार्यकाल 1942 में, भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान शुरू हुआ, जिसने अंततः भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का अंत किया। उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना करियर

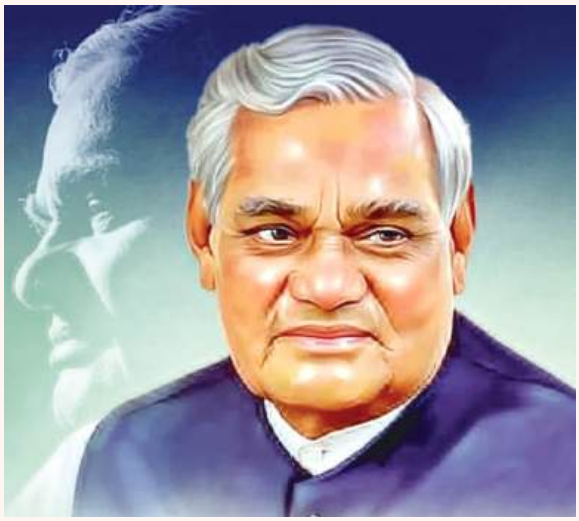

शुरू किया था, लेकिन इसे आगे नहीं बढ़ा पाए क्योंकि वे तत्कालीन भारतीय जनता संघ में शामिल हो गए, जिसने अंततः वर्तमान भारतीय जनता पार्टी को आकार दिया।

शुरुआत में उन्हें पार्टी का राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किया गया और उन्हें दिल्ली स्थित उत्तरी क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया। दीनदयाल उपाध्याय के निधन के बाद, अटल जी को भारतीय जनता संघ का नेता बनाया गया और 1968 में वे इसके अध्यक्ष बने। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रखर वक्ता थे, जिसका उपयोग उन्होंने संघ की नीतियों का बखूबी बचाव करने में किया।

अपने राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन के संदर्भ में, अटल बिहारी वाजपेयी नौ बार लोकसभा (संसद के निचले सदन) के लिए और दो बार राज्यसभा (या संसद के उच्च सदन) के लिए चुने गए। इस प्रकार, उन्हें एक अनुभवी सांसद माना जाता है।

प्रधानमंत्री के रूप में इतिहास

भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी का इतिहास भी उल्लेखनीय है। उन्होंने तीन कार्यकालों तक देश के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। वर्ष 1996 में, उन्होंने भारत के दसवें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। हालाँकि, जब भारतीय जनता पार्टी

लोकसभा में बहुमत हासिल करने में विफल रही, तो वाजपेयी ने 16 दिनों के बाद ही इस्तीफा दे दिया क्योंकि यह स्पष्ट हो गया था कि उनके पास सरकार बनाने के लिए आवश्यक समर्थन नहीं था।

प्रधानमंत्री के रूप में उनका दूसरा कार्यकाल 1998 के आम चुनावों के बाद शुरू हुआ, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) का गठन हुआ। अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली यह सरकार कुल 13 महीने तक चली। अटल बिहारी वाजपेयी का तीसरा और अंतिम कार्यकाल 1999 से 2004 तक पूरे 5 साल की अवधि तक चला। पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद से, अटल बिहारी वाजपेयी लगातार 2 जनादेश के साथ भारत के प्रधान मंत्री बनने वाले एकमात्र उम्मीदवार थे।

योगदान

अटल बिहारी वाजपेयी ने देश के विकास में अनेक उल्लेखनीय योगदान दिए। उन्होंने न केवल भारत के प्रधानमंत्री के रूप में, बल्कि विदेश मंत्री और संसद की विभिन्न महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। वे विपक्ष के एक सक्रिय नेता भी रहे। इस प्रकार, श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वतंत्र भारत की घरेलू और विदेश नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वे सामाजिक समानता के सच्चे समर्थक और महिला सशक्तिकरण के प्रबल समर्थक थे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक ऐसे भारत में विश्वास करते थे जो 5000 वर्षों के सभ्यतागत इतिहास में स्थित होने के साथ-साथ आने वाले वर्षों में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए खुद को आधुनिक, नवीनीकृत और पुनर्जीवित भी कर रहा हो।

अटल बिहारी वाजपेयी को मुख्यत: एक व्यावहारिक व्यक्ति माना जाता था, लेकिन 1998 में परमाणु परीक्षण के लिए आलोचना के बाद, उन्होंने अविचलित और विद्रोही रुख अपनाया। उन्होंने कश्मीर क्षेत्र को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से चले आ रहे विवाद को सुलझाने के लिए समर्पित प्रयासों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके प्रेरक नेतृत्व के कारण, भारत अर्थव्यवस्था में स्थिर वृद्धि हासिल करने में सक्षम रहा और जल्द ही सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में अग्रणी बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

राजनीतिक विघटन

अपनी अनगिनत उपलब्धियों के बावजूद, अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार में कमियाँ भी थीं। भारतीय समाज का आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग अक्सर आर्थिक विकास की राह में पिछड़ा हुआ महसूस करता था। 2002 में हुए गुजरात दंगों पर अपनी ढीली प्रतिक्रिया के लिए भी वाजपेयी के नेतृत्व वाली सरकार की कड़ी आलोचना हुई थी। वर्ष 2000 की शुरुआत में, उनकी सरकार ने राज्य द्वारा संचालित कई उद्योगों से सार्वजनिक धन का विनिवेश भी शुरू कर दिया। 2004 के संसदीय चुनावों में, वाजपेयी के नेतृत्व वाले गठबंधन की हार हुई और उन्होंने दिसंबर 2005 में सक्रिय राजनीति से संन्यास की घोषणा कर दी।

व्यक्तिगत जीवन

अटल बिहारी वाजपेयी ने कभी शादी नहीं की और जीवन भर अविवाहित रहे। इसके बजाय, उन्होंने अपनी पुरानी दोस्त राजकुमारी कौल और प्रोफ़ेसर बीएन कौल की बेटी को गोद लिया। उनकी दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्य थीं और उनका परिवार उनके साथ ही रहता था। 16 अगस्त 2018 को उनका निधन हो गया।

उपलब्धियों

राजनीतिक आकांक्षाओं के अलावा, अटल बिहारी वाजपेयी एक प्रख्यात कवि भी थे। उन्होंने हिंदी में कविताएँ भी लिखीं। उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में 'कैदी कविराज की कुंडलियाँ' (1975-77 के आपातकाल के दौरान कारावास के दौरान रचित कविताओं का संग्रह) और 'अमर आग है' शामिल हैं।

देश के प्रति उनके निस्वार्थ समर्पण को मान्यता देते हुए, जिसे वे अपना पहला और एकमात्र प्यार कहते हैं, श्री अटल बिहारी वाजपेयी को 2014 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने जीवन के 50 से अधिक वर्ष समाज और राष्ट्र की सेवा में समर्पित किए। उन्हें वर्ष 1994 में 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' के रूप में सम्मानित किया गया था।

सिंगल यूज प्लास्टिक से शरीर को होते हैं नुकसान, मिले सबूत

साइंस एंड टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट (डीएसटी) के मोहाली स्थित स्वायत्त संस्थान, नैनो साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट (आईएनएसटी) ने सिंगल-यूज पेट बोतलों से शरीर को होने वाले नुकसान पर शोध किया है। इस रिसर्च के मुताबिक इन प्लास्टिक बोतलों में मौजूद नैनोप्लास्टिक्स हमारे बायोलॉजिकल सिस्टम पर सीधा वार करते हैं। डीएसटी ने इसकी जानकारी गुरुवार को दी। खाने-पीने के सामानों में पाए जाने वाले नैनोप्लास्टिक दुनिया भर में चिंता का विषय हैं और हाल के दिनों में मानव शरीर में इनकी मौजूदगी के कई प्रमाण मिले हैं, लेकिन इनके सही असर के बारे में अभी भी ठीक से पता नहीं चल पाया है। पिछले कुछ अध्ययनों में इस बात पर ध्यान दिया गया था कि प्लास्टिक कैसे पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं या होस्ट टिशू को नुकसान पहुंचाते हैं, लेकिन इंसानी सेहत के लिए फायदेमंद गट माइक्रोब्स पर इनके सीधे असर के बारे में लगभग कुछ भी पता नहीं था।

आईएनएसटी में केमिकल बायोलॉजी यूनिट के प्रशांत शर्मा और साक्षी डागरिया की टीम को मानव शरीर पर इसके गंभीर असर का पहला साफ सबूत मिला। शोधार्थियों ने पाया कि लंबे समय तक इसके संपर्क में रहने से बैक्टीरियल ग्रोथ, कॉलोनाइजेशन (मानव शरीर के भीतर बैक्टीरिया को स्थापित करने और बढ़ने की प्रक्रिया), और बचाव के काम कम हो गए, जबकि स्ट्रेस रिस्पॉन्स और एंटीबायोटिक्स के प्रति सेंसिटिविटी बढ़ गई। रिसर्चर्स ने नैनोस्केल एडवांसेज जर्नल में छपे पेपर में कहा, 'कुल मिलाकर, नतीजे बताते हैं कि रोजाना इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक से बने नैनो-प्लास्टिक बायोलॉजिकली एक्टिव पार्टिकल हैं जो गट (आंत) हेल्थ, ब्लड स्टेबिलिटी (रक्त के प्रवाह या उसके घटक के संतुलन से), और सेलुलर फंक्शन में रुकावट डाल सकते हैं।'

टीम ने लैब में पेट बोतलों से नैनो-प्लास्टिक को फिर से बनाया और तीन खास बायोलॉजिकल मॉडल पर उनका टेस्ट किया। नैनोप्लास्टिक माइक्रोबायोम पर कैसे असर डालते हैं, यह देखने के लिए एक फायदेमंद गट

बैक्टीरिया, लैक्टोबैसिलस रैम्नोसस, का इस्तेमाल किया गया। ज्यादा कंसंट्रेशन (सांद्रता) में, नैनोप्लास्टिक रेड ब्लड सेल मेम्ब्रेन (झिल्ली) को खराब करते और सेल्स को समय से पहले खत्म करते हुए पाए गए। इसके अलावा, टीम ने यह भी पाया कि लंबे समय तक अगर ये शरीर में रहे तो डीएनए को नुकसान पहुंचा है, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस (शरीर में मुक्त कणों (फ्री रेडिकल्स) और एंटीऑक्सीडेंट के बीच असंतुलन), एपोप्टोसिस (कोशिकाएं खुद को नष्ट कर लेती हैं) और इंफ्लेमेटरी सिग्नलिंग (एक जटिल आणविक प्रक्रिया जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली संक्रमण, चोट या क्षतिग्रस्त कोशिकाओं के जवाब में सूजन पैदा करने के लिए संकेतों का उपयोग करती है) के साथ-साथ एनर्जी और न्यूट्रिएंट मेटाबॉलिज्म (एक जैव-रासायनिक प्रक्रिया जो शरीर में आहार से प्राप्त पोषक तत्वों को ऊर्जा में परिवर्तित करने और उन्हें संग्रहीत करने के लिए उपयोग करती है) में भी बदलाव होता है।

शोधार्थियों ने कहा, 'नैनोपार्टिकल्स लंबे समय तक एक्सपोजर के दौरान ह्यूमन एपिथेलियल सेल्स में डीएनए डैमेज, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इंफ्लेमेटरी रिस्पॉन्स पैदा करते हैं, जिससे ह्यूमन हेल्थ के लिए ऐसे रिस्क पैदा होते हैं जिनके बारे में पहले पता नहीं था।' उन्होंने बताया कि ह्यूमन हेल्थ के अलावा, इन जानकारियों को एग्रीकल्चर, न्यूट्रिशन और इकोसिस्टम स्टडीज तक बढ़ाया जा सकता है, जहां माइक्रोबियल बैलेंस और प्लास्टिक पॉल्यूशन एक-दूसरे से मिलते हैं।

चौपाटी हुई चौपट

राजधानी रायपुर के जीई रोड स्थित एनआईटी के सामने की चौपाटी केवल एक संरचना नहीं थी। यह सत्ता और विपक्ष की जिद, बदले की भावना और राजनीतिक अहंकार का प्रत्यक्ष प्रदर्शन थी। पिछली कांग्रेस सरकार ने इसे युवाओं के मनोरंजन और शहर की रात्रिकालीन अर्थव्यवस्था का केंद्र बताकर तेजी से बनाया। जिस रफ्तार से निर्माण हुआ, संदेश साफ था कि चौपाटी किसी भी कीमत पर बनेगी।

तब भाजपा विपक्ष में थी और उसने इसे अवैधानिक, अव्यवस्थित एवं नगर नियोजन के नियमों के विरुद्ध बताते हुए सड़क से सदन तक विरोध किया। धरना, प्रदर्शन, अनशन, विरोध इतना प्रतीकात्मक हो चुका था कि यह साफ हो गया था कि अगर यह बनेगी तो बचेगी नहीं और हुआ भी वही। एक ने बनाकर दम लिया, दूसरे ने तोड़कर।

करोड़ों रुपये का निवेश, समय, योजना और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षण भर में ध्वस्त कर दिया गया और जिन लोगों ने इस चौपाटी से रोजगार पाया था, वे बजट और विकास के बहस के बीच गुम हो गए। निर्माण में भी उनका नाम नहीं, ध्वस्तीकरण में भी नहीं। वे सिर्फ राजनीतिक रस्साकशी के शिकार बने।

रुख बदलने का यह खेल नया नहीं है। दानी स्कूल चौपाटी पर जिन लोगों ने विरोध किया था, उन्हीं में से कई एनआईटी चौपाटी बचाने की अगुवाई करते दिखे और दानी स्कूल चौपाटी का समर्थन करने वाले एनआईटी चौपाटी हटाने बुलडोजर के साथ पहुंचे। यह विरोध या समर्थन का मुद्दा नहीं है बल्कि राजनीतिक सुविधा तथा अवसरवाद का सबसे स्पष्ट चेहरा है।

इतिहास दोहराया जाता है, क्योंकि राजनीतिक चरित्र नहीं बदलता। रायपुर इससे पहले भी स्काईवॉक के मामले में यह अध्याय पढ़ चुका है। भाजपा ने इसे राजधानी की पहचान और भविष्य की परिवहन योजना कहकर बनाया। कांग्रेस ने इसे अव्यावहारिक और जनविरोधी बताते हुए तोड़ने के पक्ष में खड़ी रही। आज फिर उसी स्काईवॉक का पुनर्निर्माण शुरू हो चुका है।

जनता जनप्रतिनिधियों को इस आशा के साथ चुनती है कि वे उसके हित की रक्षा करेंगे। लेकिन बार-बार यही संदेश मिलता है कि जनता की चिंता नहीं, जिद की पूर्ति ज्यादा है। निर्माण में जनता का पैसा, तोड़ने में भी जनता का पैसा। निर्णय सत्ता का होता है और कीमत जनता को चुकानी पड़ती है। शहरी विकास सत्ता परिवर्तन पर निर्भर नहीं होना चाहिए, लेकिन रायपुर में विकास का पहला मतलब पहले निर्माण फिर ध्वस्तीकरण होता जा रहा है और इस चक्र में नुकसान हमेशा उन्हीं को होता है, जो टैक्स देते हैं, जो रोजगार तलाशते हैं, जो शहर के बेहतर भविष्य का सपना देखते हैं।

रायपुर विकास के नाम पर कितनी बार राजनीतिक प्रयोगशाला बनेगा? कब तक शहर सत्ता की जिद को झेलेगा। कब तक करोड़ों रुपये मिटाए जाएंगे सिर्फ इसलिए कि योजना किसी और की थी? जिस दिन जनता सवाल पूछना शुरू करेगी, उसी दिन सत्ता जिद छोड़कर जवाब देने लगेगी। तब तक सत्ता जिद करती रहेगी और शहर कीमत चुका रहा होगा।

(समरेंद्र शर्मा)

वृहद् पुल बन रहे विकास एवं समृद्धि के सेतु

दूरस्थ क्षेत्रों में पुल निर्माण से विकास की रफ्तार हुई दुगनी

बस्तर के विभिन्न क्षेत्रों में बन रहे पुल विकास और समृद्धि के भी सेतु बन रहे हैं। नक्सल आतंक से प्रभावित रहे दूरस्थ क्षेत्रों में पुलों के निर्माण से विकास कार्य दुगुनी गति से धरातल पर उतर रहे हैं। आकांक्षी जिला कांकेर में पिछले तीन वर्षों में सेतुओं का तेजी से पूर्ण होता निर्माण सुदूरांचलों के रहवासियों के विकास और समृद्धि का भी सेतु बन रहा है। इससे सुदूरवर्ती माओवाद प्रभावित क्षेत्रों में विकास कार्यों को अच्छी गति मिल रही है। कांकेर जिले में पिछले तीन वर्षों में 101 करोड़ 16 लाख रुपए की लागत से 20 सेतु निर्माण के कार्य पूर्ण हुए हैं। इससे लगभग 160 गांवों के 80 हजार लोगों का बारहमासी सड़क संपर्क विकासखंड, तहसील एवं जिला मुख्यालय से हो गया है। इन पुल-पुलियों के निर्माण से क्षेत्रवासियों तक उच्च शिक्षा, व्यापार, पर्यटन, सामाजिक-सांस्कृतिक संपर्क, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं एवं शासन की योजनाओं की पहुंच आसान हो गई है। इससे नक्सल गतिविधियों के उन्मूलन के साथ ही क्षेत्र में विकास की गति तेज हुई है।

कुछ इलाकों के नक्सल प्रभावित होने के बावजूद चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में मिचगांव से कोड़ेकुर्से मार्ग के कि.मी. 16/2 पर कोटरी नदी पर नौ करोड़ 35 लाख रुपए की लागत से एवं आतुरबेड़ा-भैंसगांव-निब्रा मार्ग के कि.मी. 4/2 मेंढ़की नदी पर नौ करोड़ 57 लाख रुपए की लागत से महत्वपूर्ण उच्च स्तरीय पुलों के काम पूर्ण किए गए हैं। अभी जिले में कुल 60 करोड़ रुपए की लागत से 12 वृहद पुलों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। साथ ही कुल 30 करोड़ रुपए लागत के पांच वृहद सेतु कार्य निविदा स्तर पर है, जो कि शीघ्र ही प्रारंभ हो जाएंगे। इससे 136 गांवों की 68 हजार से अधिक आबादी लाभान्वित होगी। कांकेर के दूरस्थ छोटेबेठिया-मरबेड़ा-सितरम मार्ग पर कोटरी नदी पर 19 करोड़ रुपए तथा कोयलीबेड़ा-दुता मार्ग पर मेंढ़की नदी पर दस करोड़ 28 लाख रुपए की लागत से वृहद पुल

निर्माणाधीन हैं। इनके साथ ही सोनपुर-मरोड़ा मार्ग (बेचाघाट) पर प्रस्तावित पुल निर्माण कार्य की स्वीकृति अंतिम चरण पर है। इन पुलों के निर्माण से माड़ क्षेत्र से सीधा संपर्क स्थापित हो जाएगा। ये पुल क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होंगे।

कांकेर में नरहरपुर विकासखण्ड के अंतिम छोर को जोड़ने के लिए बांसपत्तर-तिरियारपानी मार्ग में स्वीकृत पांच वृहद पुलों में से एक का कार्य पूर्ण हो चुका है। शेष चार पुलों के काम अगले वर्ष (2026) मार्च तक पूर्ण हो जाएंगे। जिले के इसी सीमावर्ती क्षेत्र में लेण्डारा से ठेमा मार्ग पर दो वृहद् पुल बने हैं। इनके निर्माण से कोण्डागांव जिले के विश्रामपुरी-बड़ेराजपुर विकासखण्ड से सीधा बारहमासी संपर्क हो गया है। विकास की दौड़ में अछूता सा रह गया यह क्षेत्र भी अब तेजी से विकास करेगा।

कांकेर के कोने-कोने को राज्यीय मार्गों, राष्ट्रीय राजमार्गों, विकासखंडों, तहसीलों एवं जिला मुख्यालय से बारहमासी संपर्क स्थापित करने के लिए राज्य शासन द्वारा बजट में लगभग 250 करोड़ रुपए के 36 नवीन सेतु निर्माण कार्यों के प्रस्ताव शामिल किए गए हैं, जिनकी स्वीकृति की कार्यवाही प्रक्रियाधीन है। आगामी बजट में 25 नए सेतु कार्यों को शामिल करने के लिए 154 करोड़ रुपए के प्रस्ताव शासन को प्रेषित किया जा रहा है। इन पुलों के निर्माण से जिले के कोने-कोने से जिला मुख्यालय एवं राजधानी आने-जाने के लिए लोगों को बड़ी सुविधा मिलेगी।

मस्जिद में लाउडस्पीकर लगाने की याचिका की खारिज

कोई भी धर्म शांति भंग करने की बात नहीं करता : हाईकोर्ट

बॉम्बे हाई कोर्ट की नागपुर बेंच ने एक अहम फैसला सुनाया है। हाईकोर्ट ने कहा है कि लाउडस्पीकर का इस्तेमाल धर्म का अनिवार्य हिस्सा नहीं है। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि किसी भी व्यक्ति को अनचाही आवाजें सुनने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। यह फैसला गोंदिया जिले की मस्जिद गौसिया की एक याचिका को खारिज करते हुए सुनाया गया, जिसमें मस्जिद में लाउडस्पीकर के इस्तेमाल की बहाली की मांग की गई थी। कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता मस्जिद ने ऐसा कोई कानूनी या धार्मिक दस्तावेज पेश नहीं किया, जिससे यह साबित हो सके कि नमाज़ के लिए लाउडस्पीकर का इस्तेमाल जरूरी है।

कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले का हवाला देते हुए कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि कोई भी धर्म दूसरों की शांति भंग करके, आवाज बढ़ाने वाले यंत्रों या ढोल बजाकर प्रार्थना करने की बात नहीं कहता। सुनवाई के दौरान, 16 अक्टूबर को हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ता से यह साबित करने को कहा था कि क्या लाउडस्पीकर लगाना धार्मिक प्रथा के लिए अनिवार्य है। याचिकाकर्ता इस बात का कोई सबूत पेश नहीं कर सका। इसलिए, कोर्ट ने माना कि वे राहत पाने के हकदार नहीं हैं।

सुनने या न सुनने का भी अधिकार

बेंच ने आगे कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने यह भी नोट किया था कि जहां बोलने का अधिकार है, वहीं सुनने या न सुनने का भी अधिकार है। किसी को भी सुनने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता और कोई यह दावा नहीं कर सकता कि उसे दूसरों के दिमाग में अपनी आवाज पहुंचाने का अधिकार है। हाई कोर्ट ने पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत बनाए गए 2000 के नियमों का भी ज़िक्र किया। इन नियमों में ध्वनि प्रदूषण के स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में बताया गया है। कोर्ट ने यह भी बताया कि ध्वनि प्रदूषण से लोगों को कितनी परेशानी हो सकती है। लाउडस्पीकर से होने वाले शोर से लोगों की नींद खराब हो सकती है और वे तनाव में भी आ सकते हैं। इसलिए, कोर्ट ने इस मामले में मस्जिद की याचिका को खारिज कर दिया।

गिद्ध संरक्षण में छत्तीसगढ़ की नई उड़ान इंद्रावती टाइगर रिजर्व बना देश का मॉडल

छत्तीसगढ़ के इंद्रावती टाइगर रिजर्व ने गिद्ध संरक्षण के क्षेत्र में देशभर के लिए एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। मध्य भारत के सबसे स्वच्छ नदी-वन पारिस्थितिकी तंत्रों में शामिल यह रिजर्व अब केवल बाघों और जंगली भैंसों का ही नहीं, बल्कि विलुप्तप्राय गिद्धों के संरक्षण का भी एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है।

गिद्ध पर्यावरण के 'सफाईकर्मी' हैं और इनके बिना बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप के निर्देशानुसार इंद्रावती के टाइगर रिजर्व क्षेत्र में गिद्धों सुरक्षित क्षेत्रों (Vulture Safe Zones) का निर्माण कर इनकी घटती आबादी को बचाना और बढ़ाना है, क्योंकि गिद्ध पर्यावरण के 'सफाईकर्मी' हैं और इनके बिना बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। गिद्धों के अस्तित्व पर जहरीली दवाओं (NSAID), असुरक्षित शव निपटान और मानव हस्तक्षेप जैसे गंभीर खतरे मंडरा रहे हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इंद्रावती टाइगर रिजर्व में उपग्रह (सैटेलाइट) टेलीमेट्री आधारित निगरानी कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

गिद्ध लगभग 10,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहते हैं सक्रिय

छत्तीसगढ़ में यह अपनी तरह का पहला प्रयास है, जिसमें उच्च-रिज़ॉल्यूशन गिद्ध गतिविधि डेटा का उपयोग संरक्षण कार्यों की दिशा तय करने के लिए किया जा रहा है। अब तक के आंकड़ों से पता चला है कि गिद्ध लगभग 10,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं और घने जंगलों व मानव बस्तियों के बीच लगातार आवाजाही करते हैं।

वन्यजीव प्रबंधन को मिली नई वैज्ञानिक दिशा

गौरतलब है कि वर्ष 2022 से 2025 के बीच गिद्ध संरक्षण के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की गई हैं। राज्य में पहली बार दो गिद्धों की सैटेलाइट ट्रैकिंग के माध्यम से 18,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले त्क्क्रू डेटा पॉइंट्स प्राप्त किए गए हैं, जिससे वन्यजीव प्रबंधन को नई वैज्ञानिक दिशा मिली है। इस सफलता में क्षेत्रीय जीवविज्ञानी श्री सूरज कुमार के नेतृत्व में 'गिद्ध मित्र दल' (गिद्ध संरक्षण स्वयंसेवक दल) की अहम भूमिका रही है। यह दल घोंसलों की निगरानी, शवों के सुरक्षित प्रबंधन और स्थानीय समुदायों को संरक्षण से जोड़ने का कार्य कर रहा है। इसी सामुदायिक सहयोग का परिणाम है कि 'गुड्डा सारी गुट्टा' जैसे दुर्गम क्षेत्रों में पहली बार निर्बाध प्रजनन सुनिश्चित हो सका है।

'वुल्चर रेस्टोरेंट' की स्थापना

संरक्षण प्रयासों के तहत उप-निदेशक श्री संदीप बलागा के पर्यवेक्षण में 'वुल्चर रेस्टोरेंट' की स्थापना

भी की गई है। यह नियंत्रित भोजन स्थल हैं, जहां केवल पशु चिकित्सा परीक्षण के बाद NSAID-मुक्त शव ही रखे जाते हैं। इससे गिद्धों को सुरक्षित भोजन मिल रहा है। साथ ही ये केंद्र सामुदायिक शिक्षा के केंद्र के रूप में भी कार्य कर रहे हैं, जहां स्कूलों और स्थानीय युवाओं को पारिस्थितिकी तंत्र में गिद्धों के महत्व के बारे में जानकारी दी जा रही है।

'गिद्ध सुरक्षित क्षेत्र' (Vulture Safe Zone) की स्थापना

भविष्य की रणनीति के तहत कार्यक्रम के तीसरे चरण का नेतृत्व भी उप-निदेशक श्री संदीप बलागा करेंगे। इस चरण में तीन अतिरिक्त गिद्धों की सैटेलाइट टैगिंग, 50 से अधिक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन, पंचायतों की भागीदारी से 100 किलोमीटर क्षेत्र में 'गिद्ध सुरक्षित क्षेत्र' (Vulture Safe Zone) की स्थापना तथा छत्तीसगढ़ की पहली गिद्ध पुनर्वास कार्ययोजना के प्रकाशन का लक्ष्य रखा गया है द्य तकनीक, पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक सहभागिता को एक सूत्र में पिरोते हुए इंद्रावती टाइगर रिजर्व यह संदेश दे रहा है कि दूरदर्शी नेतृत्व में जंगल और लोग साथ-साथ आगे बढ़ सकते हैं।

(धनंजय राठौर, संयुक्त संचालक जनसंपर्क)

कांगेर घाटी में मिली अनोखी 'ग्रीन गुफा' जल्द खुलेंगे पर्यटन के नए द्वार

छत्तीसगढ़ के कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध जैव विविधता और विश्व-प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों के लिए देश-विदेश में विख्यात है। इसी कड़ी में अब कांगेर घाटी में एक और अनोखी प्राकृतिक स्थलाकृति सामने आई है, जिसे 'ग्रीन केव' (ग्रीन गुफा) नाम दिया गया है।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री केदार कश्यप के निर्देशानुसार राज्य सरकार द्वारा पर्यटन और वन्य धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन को विशेष प्राथमिकता दी जा रही है। ग्रीन गुफा के पर्यटन मानचित्र में शामिल होने से कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटन को नया आयाम मिलेगा, जिससे स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और क्षेत्रीय विकास को गति प्राप्त होगी और शीघ्र ही पर्यटक इस अद्भुत गुफा की प्राकृतिक खूबसूरती का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे। वन विभाग द्वारा आवश्यक तैयारियां पूर्ण किए जाने के बाद शीघ्र ही इस गुफा को पर्यटकों के लिए खोले जाने की योजना है।

उल्लेखनीय है कि यह ग्रीन गुफा कोटुमसर परिसर के कंपार्टमेंट क्रमांक 85 में स्थित है। गुफा की दीवारों और छत से लटकती चूने की आकृतियों (स्टैलेक्टाइट्स) पर हरे रंग की सूक्ष्मजीवी परतें पाई जाती हैं, जिसके कारण इसे 'ग्रीन केव' नाम दिया गया है। चूना पत्थर और शैल से निर्मित यह गुफा कांगेर घाटी की दुर्लभ और विशिष्ट गुफाओं में से एक मानी जा रही है।

ग्रीन गुफा तक पहुंचने का मार्ग बड़े-बड़े पत्थरों से होकर गुजरता है। गुफा में प्रवेश करते ही सूक्ष्मजीवी जमाव से ढकी हरी दीवारें पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। आगे बढ़ने पर एक विशाल कक्ष दिखाई देता है, जहां से भीतर की ओर चमकदार और विशाल स्टैलेक्टाइट्स तथा फ्लो-स्टोन (बहते पानी से बनी पत्थर की परतें) देखने को मिलती हैं, जो गुफा की प्राकृतिक भव्यता को और भी बढ़ा देती हैं।

घने जंगलों के मध्य स्थित यह गुफा अपनी अनोखी संरचना और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण पर्यटकों के लिए एक नया आकर्षण केंद्र बनने जा रही है। वन विभाग द्वारा गुफा की सुरक्षा एवं नियमित निगरानी की जा रही है। साथ ही पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पहुंच मार्ग, पैदल पथ तथा अन्य आवश्यक आधारभूत संरचनाओं का विकास कार्य प्रगति पर है। वन विभाग द्वारा कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के पर्यटन विकास के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

विश्व का इकलौता कौशल्या माता मंदिर

छत्तीसगढ़ में आज हम आपको ले चल रहे हैं ऐसे पौराणिक स्थल की सैर पर, जिसका संबंध त्रैतायुग से रहा है। एक ऐसी नगरी जिसे भगवान राम का ननिहाल कहा जाता है। यहां पूरी दुनिया में भगवान राम की माता कौशल्या का इकलौता मंदिर स्थित है।

रोचक है यहां का इतिहास

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से करीब 25 किलोमीटर की दूर पर स्थित है चंदखुरी गांव। इस गांव को भगवान राम की माता कौशल्या की जन्म स्थाली माना जाता है। यहां तालाब के बीचो-बीच माता कौशल्या का मंदिर मौजूद है, 1973 में मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया था। त्रेतायुग से जुड़े इस स्थान का इतिहास भी रोचक है। इसी गौरवशाली इतिहास के चलते छत्तीसगढ़ में भगवान राम को भांजे के रूप में पूजा जाता है परंपरा ऐसी है कि आज भी भांजे को श्री राम का प्रतीक मानकर यहां मामा अपने भांजे का पैर छूकर आशीर्वाद लेते हैं।

तालाब के बीच स्थित है माता कौशल्या मंदिर

चंदखुरी में माता कौशल्या मंदिर जलसेन तालाब के बीचो बीच स्थित है। कभी इस इलाके में 126 तालाब हुआ करते थे। फिलहाल 20-25 तालाब ही मौजूद हैं। जलसेन तालाब के बीच में मौजूद होने की वजह से कौशल्या धाम की खूबसूरती और बढ़ जाती है। ऐसा माना जाता है कि राजा दशरथ से विवाह में भेंटस्वरूप राजा भानुमंत ने बेटी कौशल्या को दस हजार गांव दिए थे। इसमें उनका जन्म स्थान चंद्रपुरी भी शामिल था। चंदखुरी का ही प्राचीन नाम चंद्रपुरी था। माता कौशल्या को चंद्रपुर विशेष प्रिय था। राजा दशरथ से विवाह के बाद माता कौशल्या ने तेजस्वी और यशस्वी पुत्र राम को जन्म दिया। जगत पति राजा राम ने अपने बाल्यकाल के अलावा वनवास का भी कुछ समय चंदखुरी में बिताया था। भगवान राम के वनवास से आने के बाद उनका राज्याभिषेक किया गया। राज्याभिषेक के बाद तीनों माताएं कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी तपस्या के लिए चंदखुरी ही पहुंचीं थीं। मान्यता है कि यहां स्थित जलसेन तालाब के पास ही वे तपस्या करती थीं।

मंदिर परिसर में बनाया गया है भव्य द्वार

यहां परिसर में भव्य गेट, मंदिर के चारों ओर तालाब का सौंदर्यीकरण, आकर्षक पथ निर्माण किया गया है। रात के वक्त मंदिर परिसर की भव्यता देखते ही बनती है। शानदार लाइट्स मंदिर को और आकर्षक बनाते हैं। मंदिर चारों ओर से मनमोहक उद्यानों से घिरा है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले के सीतामढ़ी में हरचौका से लेकर सुकमा के रामाराम तक 2260 किलोमीटर का रम वन गमन पर्यटन परिपथ विकसित किया जा रहा है। पर्यटन परिपथ के जरिए राज्य में न केवल ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि पर्यटन के नए वैश्विक अवसर भी बढ़ेंगे। राज्य पर्यटन बोर्ड द्वारा तैयार की गई राम वन गमन पर्यटन परिपथ परियोजना के प्रथम चरण में भगवान राम के वनवास से जुड़े नौ स्थानों को विकसित करने की योजना है।

राम वन गमन पथ सर्किट का हिस्सा

रघुनंदन की जननी माता कौशल्या का ये दुनिया में इकलौता मंदिर है। इसके बारे में बहुत ज्यादा जानकारी लोगों को नहीं थी। इस स्थान को असल पहचान मिली साल 2021 में जब छत्तीसगढ़ सरकार ने इस क्षेत्र का विकास कर इसका कायाकल्प की। प्रदेश सरकार छत्तीसगढ़ में राम वन गमन परिपथ का निर्माण कर रही है। चंदखुरी से राम वन गमन परिपथ की शुरुआत हुई। 21 अप्रैल 2021 को रामनवमी के दिन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कौशल्या माता के भव्य मंदिर के नए स्वरूप का लोकार्पण किया।

रामलला का ननिहाल है यह जगह

माता कौशल्या का जन्मस्थान होने की वजह से चंदखुरी के साथ ही पूरे छत्तीसगढ़ को रामलला का ननिहाल भी कहा जाता है। हर साल दीपावली के अवसर पर चंदखुरी में भी भव्य उत्सव होता है। दीये जलाए जाते हैं। लोग भगवान राम की विजय और अयोध्या वापसी का जश्न मनाते हैं। चंदखुरी स्थित कौशल्या धाम में दीपावली पर नजारा बेहद खास होता है। पूरा परिसर दीपों की श्रृंखला से जगमगा उठता है। रामनवमी, हनुमान जन्मोत्सव के दौरान भी यहां भव्य आयोजन किए जाते हैं। कौशल्या मंदिर के पास ही वैद्यराज सुषेण की समाधि भी है। कहा जाता है कि रावण के अंत के बाद लंका से भगवान राम के साथ सुषेण वैद्य भी आए थे और यहां चंदखुरी में ही उन्होंने प्राण त्यागे थे।

कैसे पहुंचें

चंदखुरी की दूरी रायपुर से 27 किलोमीटर है। रायपुर देश के विभिन्न शहरों से रेल, सड़क और वायु मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। रायपुर से बस, टैक्सी, ऑटो के जरिए आसानी से चंदखुरी पहुंचा जा सकता है।

सफलता के लिए निरंतर सीखना, कौशल निखारना और आत्मविकास अनिवार्य

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के छठवें दीक्षांत समारोह का आयोजन आज पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के मुख्य आतिथ्य में गरिमामय वातावरण में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्यपाल रमेन डेका ने की। अति विशिष्ट अतिथि के तौर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, विशिष्ट अतिथि उपमुख्यमंत्री अरुण साव तथा उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा शामिल हुए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ. दिवाकर नाथ वाजपेयी उपस्थित रहे। समारोह में 64 शोद्यार्थियों को शोध उपाधि, 92 गोल्ड मेडल एवं 36950 स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधि दी गई।

विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने स्नातक छात्रों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने युवा पीढ़ी की ऊर्जा और आत्मविश्वास की सराहना करते हुए कहा कि भारत आज दुनिया की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में अग्रणी है और वर्तमान युवा इसका ऐतिहासिक साक्षी और भागीदार हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय से स्नातक होना शिक्षा की पूर्णता नहीं है, बल्कि इक्कीसवीं सदी में सफलता के लिए निरंतर सीखना, कौशल निखारना और आत्मविकास अनिवार्य है।

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि देश के विश्वविद्यालयों में बेटियाँ शिक्षा के क्षेत्र में कई बार बेटों से आगे निकल रही हैं और इस विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदक विजेताओं में भी बेटियों की संख्या उल्लेखनीय है। उन्होंने विद्यार्थियों, विशेषकर पदक विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि उनकी यह उपलब्धि केवल उनकी मेहनत का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे माता-पिता का त्याग, परिवार का सहयोग और गुरुओं का अमूल्य मार्गदर्शन भी निहित है। यह हर विद्यार्थी के लिए एक सुनहरा यादगार पल है, जिसे वे जीवनभर याद रखेंगे। उन्होंने कहा कि- 'कभी यह मत सोचिए कि आप पीछे रह गए हैं। यदि आप प्रयास करना नहीं छोड़ते, तो आप हमेशा पहले स्थान पर हो सकते हैं।' उन्होंने छात्रों से अपने सपनों को साकार करने के लिए परिश्रम करने, भारतीय संस्कृति, मूल्यों और जड़ों से जुड़े रहने और योग व विज्ञान जैसी भारतीय विरासत को अपनाने का आह्वान किया।

राज्यपाल रमेन डेका ने कहा कि जीवन में अनेक चुनौतियाँ आती हैं, जिनमें कभी-कभी हम गिरते भी हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हर बार स्वयं को संभालकर फिर से खड़ा होना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जीवन में गिरावट से भयभीत न हों और हमेशा उठने का साहस रखें। राज्यपाल ने अनुशासन को जीवन में सफलता की मजबूत नींव बताते हुए कहा कि जीवन एक सुंदर यात्रा है, और इसे उद्देश्यपूर्ण, सकारात्मक और सार्थक ढंग से जीना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर ध्यान आकर्षित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि आज तनाव एक बड़ी चुनौती बन चुका है। इसलिए योग, ध्यान और नियमित शारीरिक गतिविधि को जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना जरूरी है। उन्होंने विद्यार्थियों से यह भी आग्रह किया कि वे जीवन में ऐसा कार्य चुनें जिसमें तनाव कम हो, पारदर्शिता हो और जिससे स्वयं, समाज और राष्ट्र का सकारात्मक परिवर्तन संभव हो।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि सफलता केवल डिग्री से नहीं, बल्कि सीखने की निरंतर इच्छा से तय होती है। दुनिया तेजी से बदल रही है, और जो युवा अपनी संस्कृति की जड़ों से जुड़े रहते हुए तकनीक, नवाचार और मेहनत का मार्ग चुनते हैं, वहीं कल का भारत गढ़ेंगे। जीवन में अवसर हमेशा बाहर नहीं मिलते,

कई बार हमें स्वयं अवसर बनाना होता है। अनुशासन, लगन और सकारात्मक दृष्टि ही वह शक्ति है, जो हर साधारण क्षण को असाधारण उपलब्धि में बदल देती है। उन्होंने कहा कि मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यह पीढ़ी छत्तीसगढ़ को और पूरे देश को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि यह समारोह केवल औपचारिक आयोजन नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सपनों, संकल्पों और संघर्षों का उत्सव है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बहुविषयक अध्ययन, कौशल आधारित शिक्षण, चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम, अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट और आधुनिक पाठ्यचर्या जैसी व्यवस्थाओं को लागू करने की सराहना की, जिससे छात्र वैश्विक अवसरों का लाभ उठा सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विवि में डिजिटलईजेशन के माध्यम से विश्वविद्यालय द्वारा प्रवेश प्रक्रिया, परीक्षा फॉर्म, ट्रांसक्रिप्ट और डिग्री प्रमाणपत्र जैसी सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया है। इस नई प्रणाली से छात्रों को सरल, पारदर्शी और त्वरित सेवाएँ मिल रही हैं। उन्होंने कहा कि पीएम उषा कार्यक्रम के तहत वित्तीय सहायता नए प्रयोगशालाओं, स्मार्ट कक्षाओं, डिजिटल लाइब्रेरी और आधुनिक अकादमिक अवसंरचना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगी इससे विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और नवाचार को सुनिश्चित कर सकेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्वविद्यालयों को राज्य की आवश्यकताओं के अनुरूप कृषि विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक संरचना, भाषा-साहित्य और तकनीकी नवाचार जैसे क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शोध को प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि दीक्षांत समारोह ने विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को ज्ञान, अनुशासन और प्रेरणा का एक उत्सव प्रदान किया और अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा में गुणवत्ता और नवाचार की प्रतिबद्धता को उजागर किया।

उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी जी के मार्गदर्शन में बने इस राज्य ने शिक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा ने कहा कि दीक्षांत समारोह छात्रों के परिश्रम, संघर्ष और लगन का सम्मान है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है तथा 20 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है, जिससे शैक्षणिक अधोसंरचना और अधिक मजबूत होगी। अतिथियों ने विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका कन्हार का भी विमोचन किया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य डॉ. अरूण दिवाकर नाथ वाजपेयी ने दिया।

कार्यक्रम में विधायक सर्वश्री अमर अग्रवाल, धर्मजीत सिंह, धरमलाल कौशिक, सुशांत शुक्ला, अटल श्रीवास्तव, दिलीप लहरिया, क्रेडा के अध्यक्ष भूपेन्द्र सवन्नी, महापौर पूजा विधानी, कुलसचिव डॉ. तारणीश गौतम सहित विश्वविद्यालय के प्राध्यापक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद थे।

जनजातीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने जनजातियों के श्रद्धा, पुजा स्थलों को अखरा विकास योजना के तहत् विकास करने तथा उनके संस्कृति एवं परंपराओं को सहेजने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। राज्य के आदिवासी क्षेत्रों के गांवों की पुरातन संस्कृति, जैसे पारंपरिक कलाओं, लोक कथाओं और अनुष्ठानों को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करने हेतु अखरा स्थलों का विकास करने का निर्णय लिया है। इस उद्देश्य से इस योजना के लिए वित्तीय वर्ष 2025-26 में 2 करोड़ 50 लाख रूपए का बजट में भी प्रवाधान किया गया है।

राज्य के जनजातीय संस्कृति, परंपराओं तथा अनुष्ठानों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती 15 नवम्बर जनजातीय गौरव दिवस को छत्तीसगढ़ सरकार मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में पूरे उत्साह और सम्मान के साथ मना रही हैं। पिछले वर्ष रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने राज्य के बैगा-गुनिया-सिरहा-हथजोड़ को प्रोत्साहित करने तथा जनजातीय वर्ग के पूजा व सांस्कृतिक स्थल को अखरा विकास योजना के तहत विकसित करने का संकल्प निश्चित रूप से जनजातीय लोग संस्कृति को संरक्षण एवं संवर्धन करने की दिशा में भी सार्थक पहल हैं।

इसी के साथ ही प्रदेश के आदिवासी सांस्कृतिक दलों को सहायता प्रदान करने के लिए सांस्कृतिक वाद्य यंत्र क्रय करने हेतु अनुदान स्वरूप प्रति दल को 10 हजार रूपए दिए जाने का प्रावधान किया गया है। इस योजना से पिछले 2 वर्षों में 1180 सांस्कृतिक दलों को लाभान्वित किया गया है। इसी तरह आदिवासी संस्कृति का परिरक्षण एवं विकास योजना के तहत् आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में आदिवासियों के पूजा एवं श्रद्धा स्थल (देवगुड़ी) के निर्माण एवं मरम्मत हेतु 5 लाख रूपए का प्रावधान किया गया है। इस योजना से विगत 2 वर्षों में आठ सौ देवगुड़ी के लिए 15 करोड़ 97 लाख 50 हजार रूपए स्वीकृति प्रदान की गई है।

मुख्यमंत्री आदिवासी परम सम्मान निधि योजना के तहत् आदिवासियों के तीज-त्यौहारों संस्कृति एवं परंपरा को संरक्षित करने एवं इन त्यौहारों-उत्सवों को मूल स्वरूप में आने वाले पीढ़ी को हस्तांरित करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई है, वहीं सांस्कृतिक परंपराओं का अभिलेखिकरण भी शुरू किया गया है। इसके लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत को 10 हजार रूपए उपलब्ध कराई

जा रही है। इन 2 वर्षों में 11266 ग्राम पंचायतों को 11 करोड़ 26 लाख 60 हजार की सहायता प्रदान की गई है।

इस वर्ष धरती आबा बिरसामुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में बीते महीने 20 नवंबर को अम्बिकापुर की धरती में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू पधाकर प्रदेश के जनजातीय समाज के लोगों को जनजातीय पुरोधाओं के शौर्य गाथा को स्मरण कर उनके रास्ते में चलने का आहावन किया। यह छत्तीसगढ़ के लिए गौरव की बात है।

यह उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धरती आबा बिरसा मुंडा 150 वीं जयंती पर 15 नवंबर को बिहार के जमुई से देश के जनजातीय पुरोधाओं और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के योगदान को मान-सम्मान के साथ संरक्षित करने का आव्हान किया था। वहीं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जनजातीय समुदाय के कल्याण के लिए पृथक से मंत्रालय गठन कर इस समुदाय के विकास को एक नई दिशा दी।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए देश में सबसे बड़ी दो योजनाएं शुरू की हैं। प्रधानमंत्री जनमन योजना के तहत 24,000 करोड़ रूपए और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के लिए 80,000 करोड़ रूपए का बजट प्रावधान किया है, जिसके चलते जनजातीय इलाकों में तेजी से बुनियादी सुविधाओं का विकास और जनजातियों की बेहतरी के काम हो रहे हैं। राज्य में जनजातीय समाज को इन दोनों ही योजनाओं का लाभ दिलाने के लिए राज्य में डेढ़ लाख से अधिक आदि कर्मयोगी तैयार किए गए हैं।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती वर्ष समारोह के अवसर पर छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातीय समुदाय से ताल्लुक रखने वाले बैगा, गुनिया, सिरहा लोगों के लिए मुख्यमंत्री सम्मान निधि दिए जाने की घोषणा की। इसके तहत उन्हें प्रति वर्ष 5 हजार रूपए की आर्थिक सहायता दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने जनजातीय गांवों में धार्मिक एवं मांगलिक कार्य के लिए अखरा निर्माण विकास योजना शुरू करने और जनजातीय समुदाय के शहीदों की प्रतिमाएं चिन्हित स्थलों पर स्थापित किए जाने की उल्लेखनीय पहल की है। इससे सरकार जनजातीय समाज का विश्वास जीता है, वहीं जनजातियों के संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में मिल का पत्थर साबित हो रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय के नेतृत्व छत्तीसगढ़ के जनजातीय समुदाय के विभूतियों, राज्य में हुए जनजातीय विद्रोह के शहीदों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजनों को सम्मानित करने की योजना भी जनजातियों के सम्मान में एक उल्लेखनीय कदम है। इसके साथ ही राज्य के जनजातीय लोककलाओं और वाचिक परंपराओं के ज्ञानवर्धन के लिए दस्तावेजीकरण की दिशा में कदम बढ़ाकर अनुकरणीय कार्य किया है।

मुख्यमंत्री की अखरा विकास घोषणा में जनजातीय समुदाय के विकास एवं सम्मान के प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चिंता झलकती है प्रधानमंत्री ने 2047 तक विकसित भारत के संकल्प में देश के हर उन पिछड़े हुए वर्गों के विकास की चिंता की है। इनमें जनजातीय समाज का उत्थान प्राथमिकता में शामिल है। इसी दूरदृष्टि सोच का परिणाम है कि आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान और पीएम जनमन योजना के माध्यम से जनजातीय समुदाय के लोगों का जीवन स्तर बेहतर हो रहा है।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती के अवसर पर देश के दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों के बुनियादी सुविधाओं के विकास एवं विस्तार वाली 6600 करोड़ की लागत वाली कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का शुभारंभ किया है। इससे देश के जनजातीय इलाकों और जनजाति समुदाय के कल्याण के लिए पांच गुना बजट खर्च कर रहे हैं। दस साल पहले इसका बजट मात्र 25,000 करोड़ रूपए हुआ करता था, जो अब बढ़कर 1,25,000 करोड़ रूपए हो गया है।

प्रधानमंत्री ने कहा है कि इतिहास में आदिवासी समाज के लोगों को वह स्थान नहीं मिला, जिसके वह अधिकारी थे। आदिवासी समाज वो है, जिसने राजकुमार को मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम बना दिया। इस समाज ने देश की संस्कृति और परंपरा का मान बढ़ाया है। आदिवासी समाज सूर्य, वायु और पेड़-पौधों, पहाड़-पर्वत को पूजने वाला समाज है। हम सब मिलकर जनजातीय समाज के विचारों को देश की प्रगति का आधार बनायेंगे।

(डॉ. ओम डहरिया, सहा. जनसपंर्क अधिकारी)

बस्तर में शांति और विकास की नई इबारत

वन मंत्री केदार कश्यप के निर्देश पर बस्तर जिले के सुदूर गांव चांदामेटा, मुण्डागढ़, छिन्दगुर और तुलसी डोंगरी जो पहले नक्सल गतिविधियों के गढ़ माने जाते थे, अब शांति और विकास की नई पहचान बन रहे हैं। जहां कभी नक्सलियों की ट्रेनिंग हुआ करती थी, वहीं आज वन विभाग स्थानीय युवाओं को वानिकी कार्यों का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्व-रोजगार दे रहा है।

रोजगार की उपलब्ध से आर्थिक स्थिति भी हो रही है मजबूत

लंबे समय तक नक्सलियों के प्रभाव और कानूनों की गलत व्याख्या के कारण ग्रामीण विकास के रास्ते से भटक गए थे। शासन के प्रति अविश्वास का माहौल बना दिया गया था, लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। ग्रामीणों ने इन असामाजिक तत्वों की असल मंशा समझ ली है और वे अब भटकने के बजाय विकास में सहभागी के लिए तैयार हैं। वन विभाग के अधिकारियों द्वारा लगातार संवाद, जागरूकता और विश्वास निर्माण के प्रयासों से ग्रामीणों का नजरिया बदला है। वानिकी कार्यों में स्थानीय लोगों को घर के पास ही रोजगार उपलब्ध कराकर उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत किया जा रहा है तथा सामाजिक रूप से भी वे सशक्त हुए हैं।

बांस वन प्रबंधन से आर्थिक लाभ

मुण्डागढ़ के आसपास स्थित बांस वनों में इस वर्ष वैज्ञानिक तरीके से वन-उपचार किया गया। इस काम में ग्रामीणों को लगभग 20 लाख रुपये का तत्काल रोजगार मिला, जो सीधे उनके बैंक खातों में जमा होगा। अगले तीन वर्षों में लगभग एक करोड़ 37 लाख रुपये के अतिरिक्त रोजगार की संभावना है। इस क्षेत्र से प्राप्त 566 नोशनल टन बांस के उत्पादन का पूरा लाभ वन प्रबंधन समिति के माध्यम से ग्रामीण विकास में ही खर्च किया जाएगा।

क्षेत्रीय वानिकी उपचार बढ़ाएगा रोजगार

छिन्दगुर और चांदामेटा के पहाड़ी क्षेत्रों में प्रवरण सह सुधार कार्य के तहत बीमार, पुराने और मृत वृक्षों को

हटाकर जंगल का उपचार किया जा रहा है, इससे ग्रामीणों को 32 लाख रुपये का तत्काल रोजगार मिल रहा है। काष्ठ उत्पादन से प्राप्त आय का 20 प्रतिशत भी गांव की समिति को मिलेगा। अगले छह वर्षों में लगभग 43 लाख रुपये का अतिरिक्त रोजगार इसी उपचार कार्य से मिलेगा। वन विभाग ग्रामीणों की जरूरतों का भी ध्यान रख कर ठंड से बचाव के लिए कंबल वितरण तथा समिति सदस्यों को टी-शर्ट उपलब्ध कराने जैसी आवश्यकताएं तुरंत पूरी की जा रही हैं।

हिंसा छोड शांति, आजीविका और आत्मनिर्भरता की ओर

वन मंडलाधिकारी उत्तम गुप्ता ने कहा कि जो इलाके पहले भय और हिंसा से पहचाने जाते थे, वे आज शांति, आजीविका और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं। वानिकी कार्यों के माध्यम से जल, जंगल और जमीन का संरक्षण करते हुए ग्रामीणों को स्थायी आजीविका दी जा रही है। बस्तर के नक्सल मुक्त गांव यह साबित कर रहे हैं कि जब विश्वास और विकास साथ आते हैं, तब बदलाव होना निश्चित है।

मजेदार कॉमेडी में दमदार मैसेज का तड़का

अजय की फिल्म में माधवन ने जीता दिल

'हम पढ़े-लिखे, प्रोग्रेसिव लोग हैं। हम मॉडर्न लोग हैं, समझते हैं...' इस एक लाइन को बहुत इंडियन परिवारों ने जिस तरह ओढ़ा है और इसकी आड़ में जिस तरह के मैनीपुलेशन पेरेंट्स करते हैं, 'दे दे प्यार 2' तगड़ी कॉमेडी के साथ इस लाइन पर करारा व्यंग्य करने वाली फिल्म है।

लव रंजन का अपना एक ट्रेडमार्क फिल्मी स्टाइल है। इसमें ढेर सारी सेल्फ-अवेयर कॉमेडी, मजेदार ड्रामा और ट्विस्ट भरी लव स्टोरीज होती हैं। 'दे दे प्यार दे' लव रंजन के प्रोडक्शन से निकली ऐसी ही मजेदार फिल्म थी। मगर इसे लव ने सिर्फ प्रोड्यूस किया था। तरुण जैन के साथ मिलकर उन्होंने फिल्म की कहानी जरूर लिखी थी, लेकिन डायरेक्ट करने का जिम्मा आकिव अली को मिला था। 'दे दे प्यार दे 2' में राइटर फिर से लव और तरुण ही हैं, पर इस बार डायरेक्टर अंशुल शर्मा हैं। डायरेक्टर बदला है, कास्ट में नए एक्टर्स जुड़े हैं। मगर 'दे दे प्यार दे 2' न सिर्फ एक दमदार सीक्वल बनकर आई है। बल्कि ये पहली फिल्म से बेहतर भी है।

लव स्टोरी में उम्र के अंतर का तड़का

अजय देवगन की 'दे दे प्यार दे' एक लव स्टोरी लेकर आई थी जिसमें करीब 50 साल की उम्र के आदमी को, अपने से आधी उम्र की लड़की से प्यार हो जाता है। इस लड़की, आयशा का रोल रकुल प्रीत सिंह ने किया था। पहली फिल्म में अजय का किरदार आशीष, अपनी पत्नी मंजू (तब्बू) से अलग हो चुका था, मगर कागजों पर डाइवोर्स नहीं हुआ था। अपनी इस यंग गर्लफ्रेंड से शादी करने के इरादे लेकर जब वो मंजू और बच्चों के सामने पहुंचता है, तब सिचुएशन कॉमेडी और ड्रामा लेकर आती है।

अब 'दे दे प्यार दे 2' में ये लव स्टोरी पहुंची है आयशा के घर। शादी के लिए आशीष (अजय देवगन) को आयशा के पेरेंट्स का अप्रूवल चाहिए। आर माधवन

और गौतमी इन पेरेंट्स के रोल में हैं। उनका दावा है कि वो 'एजुकेटेड, प्रोग्रेसिव मॉडर्न लोग हैं' और अपनी बेटी के इस अफेयर से उन्हें कोई समस्या नहीं है। मगर क्या इंडियन सोशल सिस्टम और पेरेंटिंग ट्रेडिशन में धंसा ये कपल, इस शादी के लिए राजी होगा? यही 'दे दे प्यार दे 2' की कहानी है।

पेरेंट्स का ईगो और मॉडर्न लव स्टोरी का टकराव

तरुण जैन और लव रंजन ने 'दे दे प्यार दे 2' की राइटिंग को जिस तरह सॉलिड बनाया है, वो अलग से तारीफ करने लायक है। माधवन और गौतमी के किरदारों का असली नाम भी आपको पता नहीं चलता। दोनों एक दूसरे को बड़े प्रेम और सम्मान के साथ राज जी और राज जी बुलाते हैं। दोनों ने लव मैरिज ही की थी, मगर बेटी के लव में उम्र का अंतर देखकर दोनों शॉक में हैं। इस शॉक को वो अपनी मीठी बोली और सालोंसाल प्रैक्टिस की गई आधुनिकता में जिस तरह छुपाते हैं, वो फिल्म में देखना बहुत मजेदार है।

माधवन के किरदार ने ये जो आधुनिकता ओढ़ी है, वो उनकी बहू के साथ उनके बर्ताव में बेहतर दिखता है। वो अपने घर का अगला चिराग देने जा रही प्रेग्नेंट बहू को ऐसे ट्रीट कर रहे हैं कि बेटी को इग्नोर कर दे रहे हैं। मगर अपनी बेटी के, 50 साल के लवर को देखकर उनका सारा प्रोग्रेसिव बर्ताव कपूर की तरह उड़ जाता है।

9 साल बाद माही का कमबैक

नकुशा के किरदार से फेमस माही विज 9 साल बाद सेहर होने को है शो से टीवी इंडस्ट्री में वापसी कर रही हैं। माही एक ऐसे शो में नजर आएंगी जो उनकी रियल पर्सनैलिटी से बेहद अलग है। वो शो में 16 साल की बेटी की मां के किरदार में है, जो पति के दकियानूसी विचारों से तंग है और अपनी बेटी की किस्मत बदलना चाहती है। वो एक हिजाबी महिला का रोल निभा रही हैं। इस बारे में उन्होंने बात की।

कहानी ने खींचा अपनी ओर

माही शो के प्रोमो में हिजाब पहने, आंखों में दर्द और बेटी को कुछ बनाने का जुनून लिए दिख रही हैं। माही हालांकि बताती हैं कि उन्हें इस शो के लिए खास तैयारी नहीं करनी पड़ी। वो पहले ही एक मां हैं और बेटी को कुछ बनाने और प्रोटेक्ट करने की भावना को समझती हैं। TOI से माही ने बताया कि उन्हें इस शो में क्या खींच लाया, कौसर का किरदार निभाना कितना भावुक था और क्यों ये मां-बेटी की कहानी उनके दिल के बेहद करीब है।

माही ने कहा कि- सेहर होने को है एक मां और बेटी की कहानी है, जो पीढ़ियों से चली आ रही जुल्म और पितृसत्ता की जंजीरों को तोड़ना चाहती हैं। कौसर अपनी बेटी को लखनऊ इसलिए लाती है ताकि उसे वो आजादी मिले जिससे उसे कभी लड़ने का मौका भी नहीं मिला। लेकिन सेहर का पिता परवेज इसके खिलाफ खड़ा है और उसे माहिद से शादी कराना चाहता है।

इस शो के लिए कैसे की तैयारी?

माही ने बताया कि वो खुद तीन बच्चों की मां हैं। दो उनके गोद लिए बच्चे और एक उनकी बायोलॉजिकल बेटी तारा, इसलिए उनके लिए इस कैरेक्टर से रिलेट करना मुश्किल नहीं था। वो बोलीं- मेरे लिए मां-बेटी का रिश्ता किसी बड़ी तैयारी की नहीं, बल्कि ईमानदारी की मांग करता था। मैं असल जिंदगी में भी मां हूं, इसलिए कौसर का अपनी बेटी को बचाने का डर और उसकी बेचैनी मैं महसूस कर सकती थी।

मैंने एक्टिंग करने की कोशिश नहीं की। मैंने सिर्फ महसूस किया। मैंने ज्यादा ध्यान कौसर के भीतर के हिस्सों को समझने पर दिया। हर दिन लड़ी जाने वाली लड़ाई की थकान, बेटी को और ज्यादा देने में असमर्थ होने का अपराधबोध, और वो छोटे-छोटे पल जिनसे उसे आगे बढ़ने की ताकत मिलती है।

मुस्लिम बैकग्राउंड पर बना शो, कैसे है अलग?

माही ने कहा- सेहर होने को है सिर्फ सतही ड्रामा पर नहीं टिका है। ये कहानी एक ऐसी मां की है जो चाहती है कि उसकी बेटी को वो मौका मिले जो उसे कभी नहीं मिला। उसके पिछले दर्द ने उसे कड़वा नहीं बनाया, बल्कि और मजबूत बना दिया। अपने बच्चे की बेहतर जिंदगी की चाह जग-जाहिर है, और शो इसी सच्चाई को ईमानदारी से दिखाता है। यही चीज इसे बाकी शोज से अलग बनाती है।

माही ने कहा कि अगर उन्हें कौसर की जिंदगी एक लाइन में बतानी हो तो, वो कहेंगी- कौसर दुनिया नहीं बदलना चाहती, वो सिर्फ अपनी बेटी की दुनिया बदलना चाहती है। शो में माही के साथ रिशिता कोठारी, पार्थ समथान भी हैं।

3 साल के सर्वज्ञ को फिडे रेटिंग

दुनिया का सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बने; इतनी सी उम्र में नहीं खेले थे आनंद, कार्लसन, गुकेश

भारत के सर्वज्ञ सिंह कुशवाहा ने मात्र तीन साल, सात महीने, 20 दिन की उम्र में इतिहास रच दिया है। मध्य प्रदेश के सागर जिले के इस नन्हे खिलाड़ी ने आधिकारिक फिडे रेटिंग हासिल कर दुनिया के सबसे कम उम्र के रेटेड चेस खिलाड़ी बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है।

यह उपलब्धि उन्होंने कोलकाता के अनीष सरकार का रिकॉर्ड तोड़कर हासिल की, जिन्होंने पिछले वर्ष तीन साल, 8 महीने, 19 दिन की उम्र में यह मील का पत्थर छुआ था। नर्सरी में पढ़ने वाले सर्वज्ञ की शतरंज की समझ और खेल क्षमता उम्र से कहीं आगे निकल चुकी है उनकी रैपिड रेटिंग 1572 है। सर्वज्ञ के पिता सिद्धार्थ सिंह के अनुसार, उन्होंने बेटे की अद्भुत स्मरण शक्ति और तेज सीखने की क्षमता को देखते हुए उसे पिछले साल शतरंज की ओर प्रेरित किया। सिर्फ एक हफ्ते में उसने सभी मोहरों के नाम और उनकी चालें बिल्कुल सही सीख लीं। उसमें ऐसी एकाग्रता और धैर्य है जो उसकी उम्र के बच्चों में दुर्लभ है।

नन्हा सर्वज्ञ रोजाना चार से पांच घंटे शतरंज की प्रैक्टिस करता है। वह एक घंटे स्थानीय ट्रेनिंग सेंटर में प्रैक्टिस करता है। इसके अलावा ऑनलाइन वीडियो से टेक्निक सीखता है। खास बात है कि वह रात में उठकर भी बिना थके घंटों खेल सकता है।

हर सही चाल पर मिलती है टॉफी और चिप्स कोच नितिन चौरसिया बताते हैं कि शुरुआत में सर्वज्ञ को ट्रेनिंग देना कठिन था। हल्की डांट पर भी वह रो पड़ता था। ऐसे में उन्होंने दिलचस्प तरीका अपनाया। वे उसे हर सही चाल पर टॉफी या चिप्स देकर प्रोत्साहित करते। सर्वज्ञ के घड़ी दबाने का अंदाज बताता है कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी को सहज नहीं रहने देना चाहता।

तीन खिलाड़ियों को हराकर बनाया रिकॉर्ड फिडे नियमों के अनुसार, किसी खिलाड़ी को शुरुआत में रेटिंग प्राप्त करने के लिए कम से कम एक अंतरराष्ट्रीय रेटेड खिलाड़ी को हराना आवश्यक होता है। सर्वज्ञ ने

सिर्फ एक नहीं, बल्कि तीन ऐसे खिलाड़ियों को मात देकर रिकॉर्ड स्थापित किया।

- **मंगलुरु:** 24वीं आरसीसी इंटरनेशनल रैपिड कप में 22 वर्षीय अभिजीत अवस्थी (रेटिंग 1542) को हराया।
- **खंडवा:** धूनीवाले ओपन में 29 वर्षीय शुभम चौरसिया (रेटिंग 1559) को मात दी।
- **इंदौर:** डॉ. अजीत कसलीवाल मेमोरियल ओपन रैपिड में 20 वर्षीय योगेश नामदेव (रेटिंग 1696) पर जीत।
- **छिंदवाड़ा:** जीएच रायसोनी मेमोरियल में अभिजीत अवस्थी को फिर हराया।

इतनी सी उम्र में नहीं खेले थे आनंद, कार्लसन, गुकेश जिस उम्र में सर्वज्ञ ने फिडे रेटिंग हासिल कर ली, उस उम्र में आनंद, कार्लसन, गुकेश जैसे दिग्गजों ने खेलना भी शुरू नहीं किया था। नंबर-1 मैग्नस कार्लसन ने 5 साल, 5 बार के विश्व विजेता आनंद ने छह साल, वर्ल्ड चैम्पियन डी. गुकेश ने सात साल की उम्र में खेलना शुरू किया था।

भारत ने पांचवां टी20 जीत श्रीलंका का सीरीज में किया क्लीन स्वीप

भारतीय महिला टीम ने पांचवां टी20 इंटरनेशनल मैच जीतकर श्रीलंका का सीरीज में क्लीन स्वीप कर दिया है। तिरुवनंतपुरम के ग्रीनफील्ड इंटरनेशनल स्टेडियम में पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने हरमनप्रीत कौर के कप्तानी पारी के दम पर 7 विकेट खोकर 175 रन बनाए थे। टारगेट का पीछा करते हुए श्रीलंकाई बल्लेबाज पूरे ओवर खेलकर 160 रन तक ही पहुंच सके। श्रीलंका के लिए ओपनर हसिनी परेरा और तीन नंबर पर आईं इमेशा दुलानी ने अर्धशतक जड़ते हुए टीम की जीत की उम्मीदें जरूर जगाईं, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने दोनों को सही समय पर आउट कर

भारत की अच्छी नहीं हुई थी शुरुआत

पहले बल्लेबाजी करते हुए भारत ने 7 विकेट खोकर 175 रन जरूर बनाए, लेकिन शुरुआत अच्छी नहीं हुई थी। शेफाली वर्मा (5) और डेब्यूटेंट जी कमलिनी (12) के सस्ते में आउट होने के बाद एक समय भारत ने अपने 5 विकेट 77 रन पर खो दिए थे। हालांकि, हरमनप्रीत कौर ने कप्तानी पारी खेलते हुए भारत को सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया। उन्होंने अमनजोत कौर (21) के साथ छठे विकेट के लिए 61 रन जोड़कर भारत को चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचाया। हरलीन देओल (13), ऋचा घोष (5) और दीप्ति शर्मा (7) भी कम स्कोर पर आउट हो गईं थीं।

हरमनप्रीत कौर ने खेली कप्तानी पारी

हरमनप्रीत कौर ने 43 गेंदों में 68 रन की पारी खेली, जिसमें 9 चौके और एक छक्का शामिल रहा। उनके अलावा अमनजोत कौर ने 21 रन का योगदान दिया। हरमनप्रीत के अलावा अंतिम दो ओवरों में अरुंधति रेड्डी ने तूफानी बैटिंग करते हुए भारत का स्कोर 170 के पार पहुंचाया। अरुंधति ने 4 चौके और एक छक्के के साथ 11 गेंदों में नाबाद 27 रन बनाए। स्नेह राणा 8 रन पर नाबाद रहीं। श्रीलंका के लिए कविशा दिल्हारी, रश्मिका सेववंदी और चमारी अटापट्टू ने दो-दो विकेट लिए। निमाशा मदुशानी ने एक विकेट चटकाया।

हसिनी-इमेशा ने की भरपूर कोशिश

लक्ष्य का पीछा करते हुए हुए श्रीलंकाई बल्लेबाज हसिनी परेरा और इमेशा दुलानी ने टीम को जिताने की भरपूर कोशिश की, लेकिन कामयाब नहीं हुए। एक समय ऐसा लग रहा था कि श्रीलंका बड़ी आसानी से मुकाबला जीत लेगा, जब इन दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 79 रन की बेहतरीन साझेदारी की, लेकिन इमेशा के आउट होने के बाद श्रीलंकाई बल्लेबाजी बिखर गई। उनके आउट होने के कुछ देर बाद हसिनी भी अपना विकेट दे बैठीं, जिसने श्रीलंका की जीत की उम्मीदें खत्म कर दीं। इमेशा और हसिनी ने अर्धशतक बनाए। इमेशा ने 50 रन की पारी खेली और हसिनी ने 65 रन बनाए।

- निवेदन -

स्वतंत्र बोल से संबंधित कोई भी सुझाव या शिकायत हो तो आप नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। फोन और ई-मेल पर भी जानकारी दे सकते हैं। इसके अलावा आपके क्षेत्र से घटित कोई घटना, समाचार, या अन्य कोई गतिविधि जो पत्रिका में प्रकाशन योग्य हो.. तो उसे भी भेज सकते हैं।

छत्तीसगढ़ का सबसे विश्वसनीय हिन्दी मासिक पत्रिका
तेजी से बढ़ता यूट्यूब चैनल और न्यूज वेबसाइट को निर्भीक और
जनपक्षीय पत्रकारिता के लिये आर्थिक रूप से सहयोग करें।

बंधन बैंक
बैंक खाता नंबर - 20100031810292
आईएफएससी कोड - BDBL0001958

SB स्वतंत्र बोल

संपादक स्वतंत्र बोल, शॉप नं. 258, लालगंगा शॉपिंग कॉम्पलेक्स, घड़ी चौक, रायपुर (छ.ग.)

97543-74333, bolswatantra@gmail.com

swatantrabol swatantrabol www.swatantrabol.com हिन्दी मासिक पत्रिका

RO. No. 13621/196